श्रीगणेशाय नमः॥ दवाई खांशीको॥ कत्या २ तोले॥ पत्रजी २ तोले॥ काकडासिंगी २ तोले॥ अफलातूं ६ तोले॥ ईलायची छोटी तोले २॥ वंशलोचन तोले २॥ गोंदकीकर कीतोले २॥ खांशीकीझाल ६ टांक २॥ मदर खकी खकीले। पावभर॥ तज तोले २॥

दवाई वायविधरकी॥ अमरकंदकोमेदा तोलेभर १॥ कलमीसोरा तोलेभर २॥ पिपरकंद तोलेभर १॥ मुरीस तोलेभर २॥ नाकीकपावांधमसेतु॥ ✤ ... कीमिग २ तोले॥ करकीमिंगा॥ वसंदके विज-छटांकभर॥ सरके वेलको ... ले॥ ... मेजर १ तोले मासे॥ रोज नास्वायदिन ७ नोव वाधिर जाय॥ दवाई स्वास ... कान

पुसको ... ॥ ... सारंधक तोले २॥ पारा तोले २॥ दोनोको ... जलीकर ... समिला॥ लिंग लेपकर उपर। पानधन ... परको दिन ३ ... निगउछो॥ दवाई प्रमह ...

... ✤ मेना पाचो ५ ... सिरिल ... कंचविज। उटंगनके बोले॥ ... हमनं॥ ... सिलावर जोरा स्वपेद॥ वंशलोचन॥ माजुफल विदारीके ... दवा पर ... कुट कपड्छान करो॥ ... नहनीयाई ... सबको ... ले ...

बंग॥ रसोत॥ हिंग॥ का लोत्रोन॥ दुधमे औटावे तो इ पिवावे॥ इस्त्री के अफरा जाय॥
भैसी को॥ रामकीजर॥ इन्दकीजर॥ कासिकीजर॥ दुधमे औटापीवे॥ गौ कैरीग॥
को मूत्र उजर॥ इन्द्रजंगारी॥ प्रदर रोग॥ दारहलदी॥ रसोत॥ चिरायतो॥ नाग
रमोथा॥ अडुसा॥ रक्तचंदन॥ आके फूल॥ इनका काढाकर शाहत डाल पिवे तो
लाल॥ स्वेत॥ पीला॥ सब प्रकारका स्त्रीको प्रदर रोग जाय॥ १॥ जिमापरदा
दर को॥ पोरी॥ खर खरी॥ पवन कहदेनु॥ लाल॥ स्याम॥ बहपित नीके कहदेनु॥ पिहलसे
नु॥ सुधी॥ कारो॥ कंटवृत॥ संपात॥ कहदेनु॥ रगसे लछ्ण होय॥ धुम॥ धुमकहदे
नु॥ दक्षरसंग्रहणी को जाय॥ सोठ॥ मिर्च॥ पीपर॥ हर॥ बहेरो॥ आमरो॥ गजपीपल॥
सोफ॥ धनियो॥ धायके फूल॥ मोचरस॥ सुहागो॥ खारी नोन॥ सांभरो नोन॥
मनहारी नोन॥ समुद्रफल॥ भांग॥ आमकी गुठली॥ सब दवा घेला २॥
भर ले॥ संग्रहणी॥ रक्तचंदन॥ सोठ॥ चिरायतो॥ कुटकी॥ नागर मोथा॥ गिलो
य॥ आमरो॥ इन सब औषद लेवरावर लेय इनको काढोकर पिवतो चतुर्थ ज्वर

जाय॥ चतुर्थ ज्वर जाय॥ [illegible] इला॥ हरको वकुली॥ [illegible] सोंठ देव दारु॥ ये सब बराबर
ले काढा कर पिवे तो॥ चतुर्थ ज्वर जाय॥ चतुर्थी स करके ले॥ चतुर्थ ज्वर जाय॥ बड़ कटेरी
को जर ले रविवार के सर्प्प नीकले न वले गूगल की धूप दे पुर्ष के दाहने हाथमें बांध
रु स्त्री के बायें में बांधे चतुर्थ ज्वर जाय॥ चतुर्थ ज्वर जाय॥ धनियां॥ सोंठ गिलोय॥
मोथा॥ पदमाक॥ रक्त चंदन॥ चिरायता॥ पटोल पत्र॥ पहुकर मूल॥ कुटकी॥ इन्द्र जौ
भारंगी॥ पित्त पापरा॥ तोल भर ले॥ ज्वर जाय॥ तेजरा दोया को॥ लहसन उठीया मूढ
उढीया पामर॥ तेल मिठो ओसेर॥ कुचिला॥ [illegible] गारपा॥ तेलिया मिठो - छटांक तुषेद
कनेर की जर २॥ सेर॥ रुसकंद तोले॥ कूट तोले २ संखिया तोले २॥ जल विसेर २०॥
ताको पानी रहसेर जब छान कर फेर चढावे॥ तब पाव सेर रह॥ तेल छोड़ दे पानि
जर जाय तेल रहजाय तब सिसीमें करे मरदन करे॥ तेजरा [illegible] जाय॥ [illegible] हकी
हरतोले दो २॥ बहेरा तोले २ आमले तोले २ दारु हरदी तोले २ नागर मोथा तोले २ देवदारु
२ तोले चिरायता को॥ [illegible] छटांक भर जल तरह तो [illegible] तोले सहोंजडी [illegible] जाय

दिन ७ खाय ॥ दवाई पित्त की दवा ॥ चंदन तोले १ ॥ उसीर तोले १ ॥ लौंग तोले १ ॥
नीलोफर तोले १ ॥ केशर तोले १ ॥ कसीरी तोले १ ॥ मोथा तोले १ ॥ खाट तोले १ ॥
पाढा तोले १ ॥ खाने की विधी ॥ चुर्ण करके चावर को सत नसारी को ॥ सहत ॥ मिश्री
डालि पिवे सांझ सवेर तो दूरे पित्त ज्वर ॥ । ज्यादि सार ॥ मूर्च्छा ॥ ओर छर्दी तिनो जा
य ॥ पित्त ज्वर काथ ॥ चंदन मासे ६ ॥ सोठ मासे ६ ॥ चिरायतो मासे ६ ॥ नागरमोथा
नरी को साग ॥ पला चुरी को जड मासे ६ ॥ पित्त पापरो मासे ६ ॥ पिसके ना हो
ताजे करे तोले १० का ओटा ज पानी ॥ तिन पाव के = रह तोले २ मिश्री पाव नास ॥
सम २ डाल पिवे सांझ सवेर ॥ पित्त ज्वर जाय ॥ पित्त को खांसी जाय ता को सूल जाय ता धा सम २
इलाज ॥ मीठो तेलिया साघ तोले १ ॥ पिपर तोले १ ॥ मिर्चे काली तोले १ ॥ पिसदान
सहत मिलाय ३ ई समान जंगो ली का घो ॥ कफ खांसी जाय ॥ १ नागकेसर तोले १ ॥
जुरो तोले १ ॥ अजरख तोले १ ॥ धाई के फूल तोले १ ॥ अतिस तोले १ ॥ दाघ तोले १ ॥ छोटी इला
यची १ तोले ॥ सोन तोले २ ॥ जामन की गुठली तोले २ ॥ मोचरस तोले २ ॥ अजीठ तोले २

पा[illegible]जन॥ मुलेठि ६ मासे नोसदर मासे ६॥ ताको हुलास ले चिरा जाय॥ और मेंहदी के फूल तको लेप कर॥ ता पे पे करे॥ २॥ बातज्वर को का[illegible]॥ सोंठ तोले १॥ गिलोय तोले १॥ पीपरामूल तोले ॥ १॥ गुड तोले १॥ सब कूट कर चूरन कर तोह सात्र कर तिनमें एक तोह तोल पानी में औटावे॥ और टका भर गुड डाले॥ गर जाय सुड॥ तब आठ पार हे॥ तब पिवे॥ तो भगवान कर तो आराम हो जाई और छूद्या साम को पिवे॥ [illegible] रोग की॥ रसौत मासे॥ १ हलदी रसौत मासे २॥ चमेली के फूल मासे १॥ नीम की गिरी मासे १॥ गायके गोबर॥ ताके अरक मे गोली बनावे॥ उसी मे घिस अंजन कर॥ या सोंठ को अरक मे घिस लगा वे रात रोग जाय॥ २॥ दवा पांडरोग की॥ आक को दुध॥ गोमूत्र दो सेर २ गउ को दुध २॥ सेर॥ लोह चूरन = ताको बनाने की विधि॥ आग पे चढावे॥ लोह चूरन ता को आक के दूध में बुझावे॥ पोरे डार के ताते पाछे गोमूत्र में बुझावे॥ पोरी पोरी॥ ताते गउ को दूध पोरे २॥ डार खोया कर ले ताकू चिकने बरतन मे भर ले ताकी आठ रती को १ तोह ताजरे ऊपर ते दूध प्यावे तो पांडरोग जाई॥ दवा [illegible] के [illegible] की॥ मोर को अंडा १॥ कारी मिर्च ७ सात

दाद जाय पांस कोलेपका॥ दवाई वद को॥ दाम की मिगा तोले १॥ अंड के विज तोले २ ज
मालगोटा तोले १॥ सबको पोटरी बांध॥ हांडी में जल आसेर॥ ता में लकडी पानी के
उपर धरदे॥ ता के उपर पोटरि धरदे॥ तु वद क दिन व पानि मे जम जाय॥ ता कू चो
की नाई उतार ले॥ चना को चून ता मे गोली बांध ऊर बेर को वरावर॥ ता कू षका
वे तो वद जाय॥ सव छो होय॥ ॥ दवाई बिबन जर॥ पीपर-छटंक भर॥ गाई को पेसाव
में मिगा वे दे तिन दिन ३ फेर पिसे खूब॥ ता कू वाहि ग्या के॥ पेशाव में खवावे॥ मासे २ राम
रोजीना दिन २४॥ ॥ दवाई वाय को॥ अं... को ... ति ... रसो १ तोले ॥ ... को पिस चुराक २
२॥ घोडा को ... यदि को ... के निकाल॥ ... दो २ मासे॥ मि लाव. के खवावे॥ नाई जाय॥
दवाई वायको दुसरो॥ ... को जर के॥ छाल॥ मासे ३ ... न॥ तो ले २॥ प्या इ दे॥ वाइ जाय॥
दवाई तिमरो॥ द बडी मासे भर १॥ मोदंती रती २॥ वाई जाय॥ दवाई ग्रमि को॥ छोटी ईला
यचि मासे २॥ सिंगरफ मासे २॥ लोंग मासे २ मिर्चे कारी २॥ रसकपूर २॥ मिलावे॥ २
३ दरा ३ न बिजर २॥ ... पान ... री मेदे कर ववावे॥ परहेज २१ दिन चावर॥ दूध ३
तीन दिन घी चरी ७ दिन दार फूलका॥ घि खूब खाय २१ दिन ग्रमि जाय जस जस

दवाई गरमी की २ होने नर ३ ईलायची २ होने जोरे २ काली मिर्च २ लोंग तोले तोले भर होर
सकपूर मासे ३ २ दवाई पेचस की २ सोंफ २५ २ जीरा सफेद २५ २ काला जीरा २५ २ कासी
मिर्चे २५ २ अनार दाना २५ २ ईमली के चोईया २५ २ गुड २५ २ सहत २५ २ सरव
मुनका २५ २ इन को गाली छार बेर की बराबर बांधे आम गुलगीट दस्त दुर करे है
दवा पर सुन की २ लोंग तोले ६ नागर ३ तोले ३ २ जावी २ मिरचे २ २ मिर्चे का
ली तोले ३ इन दवा के गर्भ मे गोली बना ३ दे ज मासा २ दवा पेचस की मुके
आतो है २ लुवा विदाना ३ मासे २ रेशा खत मी ६ मासे २ सोरा ईजवार मासे ४ २ ईस
व गोल मासे ५ २ सबेत बनफसा २ तोले पिलावे डाल कर २ दवा स्वांस को २ बांस के
पता को अर्क औ चमेच का रो कर गमं के निकाले २ मुहले ३ तोल्ले २ मिसरी २ तोले अ
नार विलायती २ सहत - छटांक २ सबै को घोटे गाय के मे भूने दवा कूट कर डा
ल मिलाय कर चाटे स्वास जाय २ ॥ दवा नेत्र ३ सफेद ३ लाजू २ ३ सव गोल
छांटक - सिमरख तोले १ २ २५ २ डग्ध ॥ = पोटरी बांधे दुग्ध मे डार २ नाग केशर ३ मासे औ

मलमचेंदनको॥ सपेदचोंटनी मासे २॥ कथा पिपरीया मासे ६॥ सुपारी चीसके डारे एक२
भपिरे लही या जरा थक मासे ४॥ सिंदूर २ मासे॥ निबकी गिरी कोमाके मासे २॥ फिटकिरी ३ को
नामडाले जर मार को १ सेर निबके पत्ते सेर १ पा चसेर जलमे ओटाय ले धोधो का ह
बा डालकर मलं बनावे॥ दवा खासको॥ गोउ कोकि लोपरलोनको चना गरावर और
सामर चनावरावर॥ और बासके पत्ते मेदेइ खांस जाय॥ कटेरी गोलोना कोजर को
बकल और फूल औ आक कीजर नाको बकल इन तिनोंको पिस गोली नाथ करने
१ को बराबर॥ नामे दवा है॥ पत=सहत २॥ तो लेभि लाये पांच ५ पिसके तिनो चिज
कराइ में मिलाकर डालदे नामे १ तोले भर सिमरथ कीटरी डारदे उपरसे ढक दे नब
राम धूआं नारहे नब निकाले नबपिसके चार ४ तोले कर गोलो में मिला दे नब दवाम
४ १ पानी मे मिलापि लावे हजा विसूचका जाय हमजाय॥ दवा औ खदुख नेको राम ४
लेप॥ रसोन फिटकरी गावर लेकर लेपकर॥ पुरानि मेनकी रडोखले के और धोय
के लेप करे॥ बदकी दवा॥ सिके को घरी॥ गोटा व छटाक भर पानी टरह नोले मेसुड
उत
डालदय नोद सा होय॥ रा बाम्रमेह॥ बे रेजा मन ह नासे हुश्यमे देय अमोह

इस्त्री के पेर की दवा ॥ गा मेरे को चूरण कर मिश्री मिलाकर र न ले मे खाय पोजाय

सोंट २५॥ कुलीजन २५॥ मिर्चे २५॥ बच २५॥ राई पिपर २५॥ पान ॥ इनै वट गृह

कर कंठ को कलाख्या न॥ गोली कारी॥ चहाँ गो तोले १॥ खुरासानी अजवायन तोले

कालीमिर्च १ तोले सठ्ठ ॥ तोले गुवारपाठे मे गोली बांधे॥ हावाजू लाब की॥ दा

ल चिनी ६ मासे कबाब चिनी ६ मासे जमाल गोटा ६ मासे गेरु मासे ६ कालीमिर्च

६ मासे ॥ हररन दूर करने को॥ मुख मे रहा मासे ६॥ सब ने बन फसा तोले २॥ दबा की

श्री को॥ काकड़ासिंगी २॥ तोले॥ कालीमिर्च १ तोले॥ अफीम २ पेसा को॥ पान पांच

पहसा॥ अदरख के रस में गोली बनावे बाजरे बराबर॥ दवा हार की॥ खुरासानी

अजवायन तोले २ गामला सार गंधक तोले २॥ मेंसा गुग्गल तोले सुहागा तोले २

दवा आँखों की॥ रसोत १ तोले फिटकरी मासे १ हरकाबकल मासे १ अफीम मासे १

केशर रत्ती ४ चार इनका लेप करे गोली बनावे पोस्त के पानी में ॥ ठंडाई कुवजीरे

मामकन जूल का॥ इजीरी फल धनिये का तोले १ लंबाव बीदाना मासे ३ दाने पाचउ

का बकासीहा॥ मगज तर बूज का सीरा ५ मासे॥ सब ले तनिलोफर तो मा २ इन सब

नुकशा सरलपेट को। अर्क अदरक ४० चालीस तोले ३ सकोवन तोले ८ पका नेलिया जाय इसमे
नुरवम नावची तोले ५ पांचडाल कर अर्क अदरक मे पीसै और इस को बोतल मे भर कर डाटला
गाकर धूप में रखै दिन पांच एक लकडी के उपर कपडा लपेट को रदा हो के उपर लगावै दिन मे
३ तीन ४ चार मरतवे दाद पर लगावै तो। आंवलामो जायगा उस आंवले के उपर भी लगावै ३
तो ३ शदिन मे सरल होजायगी और जिन ने दि
सीन रहे जन आंवला दूर जाय खुशक हो जाय १ रदिन में सरल होजायगी और जिन ने दि
न इसदवाके लगाने मे लौं उन ने तिनपरे ज करे नुर्शी अदो मिर्च परेज करै द लु गारवाले
नुकशा कायदे ताकत के॥ पोस्त हलिजरद ०१ मासे। पोस्त आमला ०१ मासे मिर्च स्याह ०१
मासे। दारचीनी पिल ०१ मासे। रंजबील स्वंद ०१ मासे अकरक: ०१ मासे पिलपिल मोया ०१ मासे
कबाबा ०१ मासे। ईलायचीखुर्द इन को कूट छान पीसै कर गाम जकरे ११ तोले ६ मासेस
कर सब दवा डाल कर ३६० गोली बनाय एक गोली सुबेरसाम दूध:
के साथ। दवा न चों के नुस्खा रको है। बीजनुरसी के १ तोला रीमिर्च १ तोला बंसलोचन १ तो
ला सपेद जीरा १ तोला सतगिलोय १ तोला पानी मे पीस कै भंग को नाय गोली बनावे
गोलीराक दे लुवेसाम दवा नारजाकी मगज कसे ज ६ मासे मिर्च स्याह ३ कासे ३
चने की बराबर गोली बनावे ताजा पानी के सा परा के गोली घंटा भर पहलो देवे।
गेहूं १ तोला खोता १ तोला वरीक पीस कर सी सी मे भर कर रखे पानी मे मिला कर आंख

१ राम

५ राम

घीइ में मिलाकर लेपकरै दातों मे दरद होतु काकोयु लमिलाकर मालै ॥ सुहागा
या होतो मरहम में भरकै नीला थपडा जरा करडालै फोरा गंज होतो करस्बे तेल में मिला
कर लगावै खुजली हो मठा में मिलाकर शरीर में मलै सांप कुत्ता के काटे पर हुई में
मिलाकर लगावै ना थालिर के नसों पर सहत में मिलावे कुचलाको धूनी दे कान
मे कनेता जो मला हुई मस्सा में देय के नूसे ॥ कबीला सुर्ख ३ मासे गा खेहू ३ मासे
इनको हिस्या का उतार का गुड मिला कर गरम पानी के साथ देवै ना सूर जंखम होजे
तुनके तेल में मिलाकर लगावै हाथ पैरों में दर्द हो मालीस करै जरका होतो गाय
के पेशाब में मिला व हलदी का पीनी - घटांक भर पिलावै सुनाक होतो एक १
रत्तीनतासे में रख कर खिलावै उपर से दूध की लहसी प्यावै ॥ दवा दर्द पसली
गुरद की नुकशा ॥ राई १ तोला सुर्ख सिंगरफ १ माशे दूध में खरल कर दोरो बटी
को बांधे नीचे उपर तो न लरख कर १ हो सेर उपलों धा चटे जब फूक जावै सर्द
हो जावे निकाल कर एक १ चावल भर के नूना को डीरवे साथ देवै दर्द पसली दूर
हो ॥ मालिश घास्की ॥ कपूर १ तोला जीमायनसत १ तोला पिपरमेंट १ तोला
सबको एक जगे पीस कर बोतल में भरकर ५ दिन तक धूप में रखे तेल हो जायगा

सिरकेदर्दमें दवै य्यासमें दसैन दहजमीमेंद वेहजैमेंदवैबुखारमेंकानकेदर्दमेंपससोके
दहेमेंदवैमैरजनाऊनमेंदवेहरोमेंदवैपानीसाधहजैमेंहूकाकापानीदेवैगिदीपर
लेपनानैको दवा मुरगाकाअंडासेहजकलईलेपकारै तेलनाजव्याधिकायावूनेकाने लेउ॰
गलधीकातेल॥सुर्मेजांनर२ईनोईनकोपिसकातेलमेंमिलाकरमालिसकरेजादोको
गनारदाना
बीजेपतावांधकरउपरलेनामोवांधैगचहेहोजहर२चरनीहाजमाकोगनारदाना
जरमाअमिचेस्याहजीरास्याहगमनलवेंन३लायचोवडोहींगपीपरनंतरीक अनिस
केलाहोतीचेसा२होहोतोलेलेकरतोरकेमकेमेंगोलीमाचटनीवनावैपेटकेनरम
नुकशारखमीराकागाजवान३॥तोलेगुलैगाजवान१तोलेवहमनसपेद१४मासे
संदलसपेद१४मासेमस्तगेखर्जेमुरुक१४मासेकपानोरधा४मासेकोपाजवेरेमान१४
मासेनुखमेंजांगु१४मासेएक१सेरपानीमेंभिगोनेतनकोलुवेकोगोयकाजव
गरमपानीरहेनवमलकरघानकारएक१सेरमिस्रीकोचासनीकरकेउसमेंनके१मा॰
डालेनुकशादूसरागाजवान१तोलेगुलेगाजवान१तोलेजारदंजवायाद६मासे
गावझवानकमारर६मासेफिरंजमुरुक६मासेनांगु६मासेसंदलसपेद६मासे

राम

बहमन सपेद ६ मासे कपूर [illegible] ६ मासे किशमिश [illegible] २ तोले मिश्री ॥ सरे
[illegible] मिश्री १ तोले इलायची छोटी ६ मासे वंशलोचन ६ मासे [illegible] ३ मा०
जैर मोहरखताई ३ मासे मिजोन ३ मासे [illegible] ३ मासे [illegible] ३ मासे [illegible]
हरवा [illegible] ३ मासे [illegible] ३ मासे जाफरान ३ मासे [illegible] ६ मासे
[illegible] ३ मासे [illegible] मोती १ तोला ३ [illegible] सेकना वैद्य [illegible]
नुसखा जिसमें [illegible] जामुन की छाल तोले २ [illegible] तोले २ [illegible]
को भस्म १ तोला [illegible] गंदा [illegible] भस्म १ तोला [illegible] फल २ तोला [illegible] दवा
को कूट कर [illegible] २ मासे [illegible] पानी [illegible] नुसखा दूसरा
[illegible] मोती ३ तोला [illegible] तोला ३ सपेद [illegible] ३ तोला [illegible] ३
तोला [illegible] ३ तोला [illegible] ३ अनार के फूल ३ तोला
[illegible] ३ तोला [illegible] १ तोला [illegible]
१ तोला पिसकर [illegible] मासे [illegible] पानी के साथ [illegible] दई उपान सावे
[illegible] की [illegible] नुसखा [illegible]
[illegible] ४ मासे [illegible] १ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] चनेवरावर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥१॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नुकशानिम सै जो कपूर को कपूर ।= उड पाजाके जो तू नें ।।। जौन फाग मे छोटे
१ जोन हुगम के जो तू मे छोटे जिस तरको जाके सवान हो जाय [illegible] इसके
चूना पजपर का ।।= छाई पाव से कोरे कपडे में छान के लोगे छाने
फूल की थरी में आधा चूना तिचे आधा ऊपर विबीच में कपूर की
टिकया रख दे और २ दो पहर के लिये रख दे तब टीकिया सुक जाय तब
टिकया को आर पोह डाल दे बाद उसके फूल की थारी और फूल का कटोरा
थारी में फूल की थारी में इस कपूर की टिकया को रख कर ऊपर से कटोरा फूल के
से ढक दे बाद कटोरा को चून से बुहान कर दे बाद उसके नीचे जो टीका थाले
चढ़ा दे और उसकी आग दे दो चूल बाद उनके कपूर उड जाये तब उतारले
तब कपूर शुद्ध हो जायगा ।। [illegible] कपूर ८ तोला [illegible] २ तोला [illegible]
सपेद ४ तोला नागर मोथा २ तोला दाने इलाचीय नीचे दो ही २ तोला समुद्र फल
२ तोला पीपल जो [illegible] तोला केशर २ तोला कस्तूरी ८ मासे जीरा सपेद २ तोला
नालछड २ तोला जावित्री २ तोला जायफल २ तोला खश ४ तोला [illegible] ४ तोला
[illegible] २ तोला इमर जमे लो [illegible] हलदी २ तोला [illegible] २ तोला

कमल के फूल तेल अंजीर १ तो० दूध का ... = तेल अलसी

कमल के फूल २ तो० का धमासा २ तोला ५ अर्क गुलाब ५ तो० का फ़िर कपूर
कसतूरी केशर अर्क गुलाब मे घोट आद इन सब दवाओं का अर्क के लाग
डेढ़ सेर में मलाओ ठंडाई का चलल - बेहरी = आमला इनको उबाल कर फिर
छान के उसमे मिलाकर फिर ले बाद इसके मिल लेना कपूर होगा कपूर मिला
लेते अलफाज़ ही सुरमा - दखनी कालीमिर्च १ मासे तूतिया १ मासे
लौंग कलमी १ मासे कवाबचीनी १ मासे जौंक छील फल २ मासे गोरी के
केशर २ मासे सफेद फिटकरी २ मासे जायफल सफेद २ मासे हुमेइलायची छोटी
२ मासे

बडी इलायची छंद टंक १ अमाल गोटा ऽ= पाव फाकडु मा तोला भावना १ रसकपूर
चोबचीनी टंक टंक १ तेल मिला लै सब का गटि आ जाय ॥ दवा दस्त रोकने की है
रुमजो ॥ कपूर ॥ अफीम ॥ जायफल ॥ इनायफूल को ॥ अफीम ॥ मगी के गोंद ॥ सिंहरफ
तीनो को फूक कर मलाइ मे दे ॥ निघजर सबों की दवा ॥ नीम के पत्ता ॥ कारी मिर्च
हला हल ॥ सिंगरफ ॥ गेरू ॥ सब बराबर ले गोली बनावे ॥ दवा आतसक ॥ रसकपूर मा०
३ मिलाये तोला १॥ लोंग तोला १॥ बडी इलायची के बीज १ तोला शुद्ध अमाल गोटा मासे ६
मटर सी गोली बनावे घीमे धर कर खाय ॥ खिचरी भोजन दस्त आवे हो यदा तीन दिन
पारा मा ३ गेहूं के चून तोले २ तो खरल सा जाय जाय न तो १ गुड मे गोली बनावे १ सबेर साम
नमक बंद घी वत बेसन की रोटी दही के साथ खाय गोली २ मो० गजौर ॥ सिंदरफ मा ३
चोबचनी २ तोला ॥ तुलसी के पत्ता ३ तो ॥ उरद प्रमाण गोली बनावे घी के साथ कोह जा
सबेर कूट छानकर मिश्री डालकर खावे सो जाय जाय दस्त न पो जावे ॥ मूरी के पत्ता रात मे धर दे ओस मे
महीकर आंच मे धाकर निकार पीसकर जो लो कर मे बराबर प्रमाण मदा केसर
खाय बनासीर जाय ॥ जिमीकंद जो पान जिमीकंद मासे भून दना मिला

धाइ पा

नागकेशर x मिश्री x लोनो गायको x मिलाय खाय x बाधकाशी जाय x पीपलआमले दाख x
बेरको गुठली x सहत x मिश्री x बायबिडंग x पुहकरमूल x इनके साथ लोह भस्म खाय जानदि
चिकीतछा इनको तिन रात्रि में दुरकरे x कासकजरी x पारा x ... x पीपर x हर x बहेरा x अडूसा
एक से दुसरा दूना. कीका के काढे मे २१ इक्कीस भावना दे सुखाले सहत के साथ सेवन करे के सिद्ध
हो x विष ४ मा० का लीजिये ८ टंक x आकरकरा x जोर x कुलीजन दू टंक जायफल जावित्री २ तो०
का लीजिये १ तोला सब को एकत्र कर चूर्ण करै इसमे से ४ रत्ती सहत के साथ संगामे सेवन कर
खासी श्वास क्षय कोट संग्रहणी मंदाग्नि ... उत्साह को बढावे सो ... पोंसे
भोगने की शक्ति हो जात कफ के रोग बीस प्रकार के प्रमेह दूर करे x प्रमेह को दवा x रूमी
मस्तगी १ तो० x हजरतजहूद २ तोला x दवा दादों की x पिपरी ... २ तोला राल २ x
तो० x सुहागा २ तो० x आमला ... २ तो० नोसादर २ तो० x सिलखरी २ तो० x ... पंच
नकी के दूध मे दो दिन खरल करे ... गोली बनावे ... पानी मे x
... रस का x पारा १ तो० गंधक आमला सार २ तो० x नेलीया १ तो० x त्रिकुटा २ तो० x त्रि
फला २ तो० x इलायची १ तो० x नागकेशर २ तो० x बायबिडंग २ तो० x चीता २ तो० मोथा २ तो० x
जवाखार २ तो० x बंगालो चना २ तो० x सजीखार २ तो० x सुहागा २ तो० x ... २ तो० x जीरे
दो नो २ तो० x हींग २ तो० x ... १ तो० x सार २ तो० x अभ्रक ... x धनमापन १ तो० x

अफीम २ मासे सज्जूर [illegible] २ मासे मोती [illegible] २ मासे सुरमा कोत्रि के लेके
अकेले कूज़ा में देले [illegible] इन सब दवाओं को १ कर लौन [illegible] सुगंध
में घोर के सुरमा कर ले नडी [illegible] की मिटा २ मासे और [illegible] कर ले
कुक्षा नस्रेहक्र लाल मरचा नौ बरके दूध में भिगो वे॥ ल्याह सुतली॥ [illegible]
सली॥ [illegible] मिश्री॥ मिश्री × पानी गोरखद् × [illegible] × [illegible]
घाडे की मिग॥ बिनोले की मिग × भिंडी की घाल॥ सबको [illegible] ले
कर गोला में भर कर॥ चून की कपरौटी कर घन पकावे × [illegible]
गा मनके दूध के साथ दिया से [illegible] प निष्क [illegible] हो जाय × [illegible]
मे. लो. कान [illegible] भार को ५॥ [illegible] जा ६ = १ [illegible] होंडी में भर
कर [illegible] यंत्र में नल की लगाकर खेंच ले × [illegible] × [illegible]
मे [illegible] × खांसी की दवाई कल

१ कुलसुस २ मा. जोद [illegible] २ मा. कतीरा २ मा. सकरतीगाल २ निसासा [illegible] २ मा. मगज का [illegible] २ मा.
[illegible] २ मा. मगज बादाम २ मा. [illegible] २ मा. मगज कद्दू सिरी २ मा. [illegible]
[illegible] मिसकर २ मासे जो लीजना [illegible]

२०९ पारद भस्म ॥ पारा २ तोले भांगरे का अर्क १ सेर ८ पहर कढाई में मेंहदी की काठ लगावे और उसके चिकनो पारा धरकर भांगरे का अर्क चूना देजा भंगरे के अर्क सेर भर खतम हो जा तब उतार कर पारे कूं निकाल लेवे पारा भस्म हो जाय

न खुरासानी ३ तो॰ सज्जी खार ५ तो॰ भांगरा २ तोला इनको पीस कर लूगदी बनावे और पारे कूं रखकर बीच में कंडा २० सेर जंगली के गोलन १५ सेर फूंके ॥ तबकी पारा भस्म सोना २ तोला पारा २ तोला काठ दार चौराई में

॥ मोटे चोराई की खरारी ३॥ भटकेयाकर ५ सेर उपलों की आंच दे ३ तीन दबै सूरती भस्म होय ॥ पारा भस्म होवे कि पारा पारा २ तोले ॥ [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] काशीफल ॥ पपोटी करके पचोपा उपलों की आंच दे ॥ भस्म हो ॥

जौ अपचो विषम ज्वर को ॥ [illegible] २ [illegible] [illegible] २ टंक ॥ [illegible] ॥ [illegible] २ टंक ॥ इलायची २ टंक २

पीपल टंक २ २ कालागहन की गिरी २ दो टंक २ सोनै ॥ चोदी के वर्क २ मासे २ औषध बल देख वैसी

नाजदे ॥ वकरी का दूध पाने ज्वर खांस खांसी जाय ॥ औषधी उपदंश की रसकपूर ॥ पत्थर के पारा ॥ ॥ एक कर करए [illegible] तोले पान के रस में गोली बनाने कर बेर के बराबर ॥

दूध और भात जलोना ॥ मल को का उपदंश जाय ॥ अथ मद नपाल चूर्ण ॥

मदनपाल चूरण × गोखरू × विदारीकंद × कुलीजन असगंध एक एक २ तोले × जंघ एक पल × कौंच के बीज १ तोले × खिल बीज १ तोले × तज १ तोले × इलायची १ तोले × पत्रज माल १ तोले × पीपर १ तोले × आमला १ तोले १ नेत्र तोले १ सार १ तोले १ × चंदन लाल १ तोले × नागकेशर १ तोला मस्तगी १ तोला × छड उतो १ तोला गिलोय १ तोला × वंशलोचन १ तोला × पीस छानकर सबबराबर के २० मीसरी पुट देके कुशके फार पीसकुल हो जाय ऊपर निचोड़ मेंदिया बनाय सब नास सो भोग कराय लेगा जनको बीज नहै कामवृद्धि करे × एक लगा के पोडा है २ दोसे दूध का तीन ऽ॥। पान रहै ॥ नवज्वर

और खाँसी खांसकी पार लोधा × गांधक लोध × धनसत्ता से सफेद × सुहागा × सहागा भुना हुआ × मनफूल एक काली मिर्च २ लो मिर्च × २४ मिर्च डाले दोर ये दिन नाई होली नरहै खलकरे जंग सिद्ध होय मासा १ एक खाय × उपर से गाय की सहत मीपर वारे खांस सब जाता जाय × आदमी का छको × आक फूल × पीपर × कटेरी के बिज × सोचर नोन × लोंग × मिर्च × तमाकू × भारंगी × काकडा सिंगी × कुलीजन × मुलै ठी × बराबर लेकर कीकर के काढमे घोटकर जने प्रमाण गोली बनावे खांसी जाय × पान मे धर कर खाय ×

२२

इमली × वायविडंग × पीपल × त्रि
दवा कं खखी × पारा × गंधक × सुहागा भुना × मीठा × इमली × वायविडंग × पीपल × त्रि
फला × देवदार × त्रिकुटा × सतगिलोय × पदमाख × बराबर लै कि कर कीकर
के काथ में चने प्रमाण गोली बनावे × पान में खाये कोस जाय × धन को सकी देवा
अजमायन × कुलीजन × बच × पीपर × सब पीस कर ४ चार रत्ती पान में खाय
वा धाम का दम × टंक ४ × मालमा मिश्री ४ टंक × करतारी क × मिश्री १ सेर × गाय का दूध
म ८= × लौंग × टंक २ × दालचीनी टंक २ × इलायची टंक २ × जावित्री टंक २ × जाय
फल टंक २ × केसर टंक २ कसुरी १ तोला × मिश्री की चासनी कर सब मिला
छोटे लड्डू नहीं प उ जो टे × खुराक १ तोला प्रात सवेरे खाय × पान सु खाय पुष्ट
ला होय × दाह जर जाय × गिलोय सत तोला १ × दालचीनी १ तोला × कपूर १ तोला ×
पानी में पीस जो लीव नावे चने प्रमाण × बालक के रोग पर × छुहारे × दुदनच
अजीस × नानछ्ड × सुहागा × पान × अफीम × कौंच के बीज × इन को पीस मूंग बराब
र गोली बनावे × दस्त धुरवा पलई पा जाय × दवा पेचस की × सोंठ १ तोला × धनि
या १ तोला × नागरमोथा तोला १ × बेलगिरी १ तोला × जाडी १ तोला × ऽ।। आध सेर
पानी का = आद पाव रहे छान कर पीले वै दस्त बंद होय × तुलसी बीज सर्व

पुनरा भस्म के नोसिन [illegible] ५ सोना द्मासे को कुंदन करके जंबालड़ी
दरलिया के रस में छटांक भर [illegible] में घोटे बाद इस के [illegible] के दूध में छटांक भर
में घोटै बाद [illegible] ग्वार पठा छटांक भर में घोटे बाद इस के नागरपान में घोटे
छटांक भर में घोटे बाद इस के पान को गाढ़ पान लोके पिस कर दो टिकिया कर
के नीचे ऊपर धर कर गोला बना कर कपरोटी कर गजपुट को फूंकने देने से
नमें ह्सत हे उपला दे ने तो भस्म होगा और सिद्धा लाइटि रखो पसा नहीं है
नुकस्खा दूसरा सोना ३ मासे लेकर बरीक करके बाद इसके गुलाब का अर्क [illegible]
में घोटे बाद इस के १० दस तोला नागरके गुलाब के रस में घोटे बाद इस के १० दस तो
लाजवंती के हरिता की जड़ के रस में घोटे बाद इस के गन्दे नीम की जड़ के अर्क
१० तोला में घोटे बाद इस के अर्क १० दस तोला गुलसौ के रस में घोटे बाद इस
के गुलसौ को पत्तो की लुगदी में धर कर गोला बना कर कपर मिट्टी करके फूंक
दे भस्म होगा मिसल इटा रखा मिट्टी होगा [illegible] नुकस्खा ३ आंच दे
बाद [illegible] को भस्म होगा [illegible] नुकस्खा तीसरा १ तोला सोना अर्क फिर लेकर [illegible]
तोला लोह [illegible] तोला [illegible] पारा १ तोला संजुलजर्द २ इनको पहले [illegible] रखे बाद लोह
[illegible] पारा घोटे बाद संजुलजर्द रले सोना भस्म होगा १० उपलो की आंच देवे

दवा दस्त साफ करने की × सनाय ऽ– छटांक हरनडी ऽ– छटांक नडी इलायची और छोटी
बंश लोचन १ तोला × मुनक्का ऽ= आदफाव × आमले ऽ= आद पाव × निसोत १ तोला × कालीमिर्च
३ तोला × जीरे दोनों २ तोला × हींग भारी ४ × संधानिमक ऽ– छटांक × काला निमक १ तोला
मिश्री ऽ– छटांक × अमलतास तोला २ × कुटपीसकर २ रत्ती वजन देय मात्रा देवे। संग्रहणी
पन चूर्ण × गोखरू दोनों × ता तालमखाने के बीज × नागरमोथा × कोंच के बीज × धातावर ×
मुलेहटी × हीर कंकोली × मुसली × गिलोय × सुगंधबाला × मोचरस × लोहा × आभ्रक ×
बिधरीकंद × बड़ के अंकुर × हाथी चक के बिज × नैरेटी × आमले × जायफल × कपास के
सिंघाड़ा × गुग × भांगरा × केदार × प्रिताजिन × पाठ × गंधक × खरा मारित्क × बड़ के फल
इलायची × वायविडंग × मलैठी × सालीचावल के सांठी धान के चावल × गेहूं × उड़द ×
ये औषध समान भाग ले दो २ तोला सहजगांव का घी मिलाय के खाय पुष्ट नीय औष ×
बाजीकरण लिय ॥ × खांसकुथर स्याह मात्रा × त्रिकुटा ३ तोला × मिनासिल १ तोला ×
नेलीया १ तोला × सुहागा १ तोला × पारा १ तोला गंधक १ तोला × मिर्च ८ तोला ×
पीसकर बनावे × इन्द्रायण की रस × त्रिकुट २ तोला सुहागा × तोला १ × पारा १ तोला ×
गंधक १ तोला × जमालगोटा २ तोला × गोली बनावे × आनंद मे रस × नीम के पत्ता २ तो०
मिर्च ३ तोला × सिंगरफ मासे ६ × [illegible] × दवा दस्त रोकने की × कपूर मासे ६
जायफल मासे ६ × इन्द्रजौ मासे ६ × अफीम मासे ६ गोली बनावे

ग्रहणी कपाट × अफीम मासे ४ × पारा मासे २ × कोडी रास मासे ८ × तेलीया मासे
पीपल मासे ८ × धतूरे के बीज मासे २० × अनुपान जीरा से देवै जो ली खासी को शम कारा
कुचला मासे ६ × मिर्च तोला १ × अफीम मासे ६ × प्रतापलंकेश्वर रस × पारे तोला ४
गंधक १ तोला × अभ्रक १ तोला × पीपल १ तोला × खार १ तोला × शंख की भस्म ८ तोला
जाने उपलों की भस्म १६ तोला × तेलीयां १ तोला × बनाने × अंकुशा रस × शंख की
भस्म २० भाग × हरताल भाग ५ × तेलीया भाग ५ × घी कार के रस में घोट कर गैरा
जपुर में तोलं कुशानन ताहै दवा बानाय की × कुचला शुद्ध × तेलीया शुद्ध
तो कस्तूरि पत्ती तोला २ × इलायची छोटी तो १ तोला × जायफल मासे ६ × दालचीनी मा. ६
वंशलोचन ६ मासे × पत्रज मासे ६ पीस कर डुला स बनावे × पेठा पाक की रीती × पीपर
छोटी पल १ सोंठ पल २ जीरा सफेद पल १ धनियां पल १ पत्रज पल १ × इलायची पल १
मिर्च काली १ पल × दालचीनी पल १ × पेठा १०० पल × पानी २०० पल × मिश्री २०० पल
शहद ४ पल × बनाने × सुरमा का नुसखा × बंदूक को गोली × आम ला सार गंधक जो
नीले लकडी से कूटे दना नाप × आम ला सार की भर के देवे और ताजे सी हो पड़ कर
ले × सीतल चीनी तोला १ × चीनी मासे ६ × सुरमा तोले ४ × डल का नजला फूला रतौं धामा को
कार्य कोप ×

पीनस कु वास × कपूर × नवाकिया × वंदाल × पीस घानस काव पीन स जाय × संखिया १
मासे १२ × के धार मासा ६ दोनो को रबुव पीसकर गलगं रखै उसी रवरल में वायस को मी
मीजी ऽ=आर पापीसे फीर दोनों को मिलाले × नोन लगे मर दे या नालीजं त्रसे फाडले जेले
दना सुस्तीको × विरवहुटी × के चुगा × सूउर को चर्बी × वकरा की चर्बी × सेर की चर्बी ×
रीछ की इन्द्री × उसर संडा पेगन जि काल सुस्ती जाय . तीन दिन लोगं दवा लजा क की ×
त्रिफला × सन वै रोजा सुवनग यवल ले दुधमे मिश्री डाल धावे से जाय जाय × दना
रक्त पित्त को लारव × सुपेद सुरमा × रक्त पित्त जाय × पुयुसि × स्याह सपेद कसरी
[illegible] न बीज × धातवार × सनबान ले धी बूरा मला इ कर मचि रखि के खावे
तर उपर चार के कड़े चार चार कर फुफड़े मस्सा ठोपे × दना ऐं टा दस्त आमकी
कचूर तोला ३ × सोंठ तोला ३ × हींग मासा ३ × तीनों को मुन पीसले धेला भर सास
सवेरे दे जाय × सनोपला चटनी × मिश्री २ ६ मासे × वंशलोचन ८ मासा × छो
टी इलायची ४ मासा × पीपर छोटी मासे ८ × दाल चीनी ४ मासा × पीसकर पीपल के
रोग पर दे सहत में × मस्सा कहू वदना × वंका यम के पत्ता पीसकर लेपकरे दस्त हो
प्रशा पुराना कागज की बत्ती बनाकर गो चल गाकर हो मस्सा कहु जाय × नेत्र
गोला गिरी ६- छटांक × सुपारी गिरी छटांक ३ × गुड के चीमा ३ छटांक × लोंग छटांक २
[illegible] जो मास [illegible] फा [illegible]

यितं मुद्रेः ७ लग्नाधिनाथो यदि कर्मनाथः एकोयदि स्यात्किल पंचमस्थः त
दाहि वर्षे धनधान्यलाभं न्रूपोजनेभ्यः प्रीतियशोदयंच ८ धनस्थितेनीचगृहे
शपापे धनाधिनाथोयदिपापयुक्तः तदाहि वर्षे धनधान्यलाभं न्रूपोजनेभ्यः
प्रीतियशोदयंच ९ लग्नाधिनाथोयदि कर्मभावे कर्माधिनाथोयदिपंचमस्थेः
तदाहि वर्षे प्रकोतिनूनं हरंति कष्टं दिविधं नराणां १० लाभाधिनाथो यदिसप्तम
स्थ कलत्रनाथे भवनेहि लग्ने तथाहि वर्षे सकलार्थसिद्धिः हरंति रिष्टं कथि
तं मुनिंद्रैः ११ धनस्थाने देवगुरुर्नवमे शशि भार्गवो तदाभाग्योदयं वर्षे रिष्ट
कष्टविनाशनं १२ सौम्ये नेत्ररोगो लग्न व्ययेगतेष्वर्के सूर्य्य भौमसमन्विते तस्मि
न्वर्षे नेत्ररोगो भविष्यति न संशयः १३ धनेव्ययेगतपापलग्ने च सप्तमे यदा
न सौम्ययुक्तं दृष्टं हि अंधदोषं तदासमे अथसुख्यानयोगः कर्के गुरौ सौख्य
गते वलिष्टे सौम्यग्रहैर्युक्तनिरीक्षिते च लग्नाधिपे केंद्रगते च वर्षे सुखाप्त
नं योग वदंति संतः १५ अथ अशुभयोगः षष्टे चंद्रे पापगे भौमयुक्ते कर्म
भावे देवपूज्ये सतोऽम्य तस्मिन्वर्षे मानवानां प्रकुर्य्यात न्रूपाल्लाभ्यादष्टप्राप्तिसुखंच

कर्म्माधिनाथोयदिसौम्यखेटः धनेसुखेवासहजालयुस्था चतुस्पदस्या

चं॰यो॰ धिपतिश्चकेंद्रे अश्वादिकंलाभमनल्पपालतः स्यात् १७ यदासवीर्य्योसुख

२ ल॰२ हाधिनाथोलग्नाधिपोजन्मविलग्नपोवा केंद्रत्रिकोणायधनस्थितोसौ

सुखार्थहेमांबरलाभदः स्यात् १८ अथाग्नियोगः लग्नेराहुर्यदासौरि

र्यदिवागुरुर्यदा मूर्तौषष्ठाष्टमेभौमः ग्रहंज्वलतिपावकात् १९ अन्यच्चैर

सताजिके लग्नेपापोष्टमेपापः सप्तमेपापसंभवः तस्मिन्वर्षेविजानीयाच्चौ

राग्निशत्रुतोभयम् २० इलात्मजेमंदयुतेकलत्रेसूर्य्येधनस्थेव्ययगेशशां

केतदानराणांधनधान्यनाशंहर्म्यस्यदाहंभवतीतिवर्षे २१ आपोक्लिमस्था

यदिसूर्य्यसंस्थासर्वेग्रहाः पापशुभाभवंति तदाभवेद्योगइहैंदुवारः करोति

दुःखंविविधैः प्रकारैः २२ अथपंचमभावविचारः गर्भेशगर्भाधिपसुगेयुमा रा॰

न्सर्वेग्रहेहितः भवेत्तदाध्रुवंपुत्रवतीग्रहैः स्यात्तदांगना २३ पापखेटःस्थि ग॰

तोगर्भोगर्भेशोनैववीक्षितः तदागर्भच्युतिर्वाच्यान्यथाचेत्शुभसंस्थितिः २४

सुताधीशोलाभगतश्शुभयुक्तोथवीक्षितः लग्नेपोवात्रिकोणस्थपंचमेशशुभे

ह्लिते २५ नवेवगार्भसहसेज्ञ भस्वामीयुतोह्लीने तस्मिन्वर्षे भवद्गर्भमित्याहुय।
वनेश्वरः २६ जीवक्षेत्रगते चंद्रे शुक्रक्षेत्रगते कुजे स्वक्षेत्रस्थे भ्रगुसुतेन
दृष्टेनसंसयः २७ लग्नाधिपः सुतस्थाने जायास्थानगतोपि वा सुतजायाधि
पौलग्नेन तदा गर्भस्तु योषितः २८ सुधांसचंद्रोयदिपंचमस्थःसितेन नाथोप्य।
घवीर्य्ययुक्तः तदा च वर्षे कुरुते नराणां पुत्रोदयं तत्कथितं मुनींद्रैः २९ ज।
न्मलग्नात्त्रिकोणस्थः शनिः पुत्रभ्रगुर्यदि तस्मिन्वर्षे भवेद्गर्भ देवशोपे मुनेर्म
ते ३० सप्ताष्टवर्गेयदिसप्तमस्थोराहुः सखेटः खेलग्नसंस्थः तदा नराणां व
हुकन्यकास्युः स्वप्नेपिपुत्रस्य न तुल्यतास्यात् ३१ पंचमस्थो यदा शुक्रो भौमयुक्तो
निरीक्षितः तस्मिन्वर्षे विजानीयाद्गर्भे पुत्रसमुद्भवः ३२ देवार्चितेजन्मनि यत्र
राशौ वर्षे स राशिर्यदि पंचमस्थः तत्रस्थिते वर्षपतौ बुधे वा भौमेयवा पुत्रसमु
द्भवः स्यात् ३३ यद्राशिगो जन्मनि सूर्यपुत्रो वर्षे च तद्राशि भवं विलग्नं तस्मा
न कर्यं तु कुजे सुतस्थे विलोमगः पुत्रहरो नितांतं ३४ विद्यागृहे चंद्रबुधोप्य।
शुक्रोयुतोलिप्तश्चलग्नंवांशकेवा स्वस्वामिनादृष्टयुतंतदंकेसतस्फूर्तिविद्या।
स्तिवृद्धिभावः ३५ विद्यागृहे क्रूरखगेन युक्ते न तत्स्वामिना नष्टशरीरकेन

चंद्रेणादृष्टसहितेतदाद्धफलपुरोक्तंविपरीतं कंस्यात् ३६ अथरिष्टाध्याय: मे
ज्यो० वर्षेलग्नपरंध्रेशेचतुर्थेतिथ तोत्यगो मुथहासंयुतोतत्र तद्वर्षेमरणंध्रुवं
३ ३७ यदानाथोलग्नस्यात् गोवा जथालग्ननाथोरिभावेयदास्यात् तदाव
र्षेमध्येनराणांचमृत्युर्भवेत्तस्यचायुर्ध्रुवंदैवयोगात् ३८ छिद्राधिनाथो
रविमंडलस्थोलग्नाधिनाथोयदिनीचगेहे तदाहिवर्षेतनुसंक्षयंचभूतादि
ख्यातः कथितोमुनींद्रैः ३९ चंद्रेयदामंदयुतेष्टमस्थेलग्नाधिपेवासहितेच
दृष्टे तदाहियोगंकुरुतेनराणां विशूचिकास्वकगदेनरिष्टम् ४० लग्ना
धिनाथोमृतिभावनाथ एकोयदिस्यात्किलतत्रवर्षे तद्वर्षमध्येमरणंनरा
णां सुखव्यये चाष्टमगोरिभावे ४१ मृत्योस्थितेजन्मनिभूमिपुत्रेवर्षेचलग्ने त ५
ती दशमप्रयत्ने चतुस्पदास्यात्मेंतदाद्धे शुभंलिखितेनैवकरोतिरिष्टं ४२ छि रम:
द्राधिनाथेतनुभावयाते लग्नाधिपेछिद्रगृहेयदिस्यात् तद्वर्षमध्येप ३
करोतिमृत्युं द्यूनेकलत्रस्यतथैवरिष्टम् ४३ दैत्येज्यदेवेज्ययुतेमहीजेचा
लग्नेलग्नेनपरंध्रसंस्थेपापान्वितेशीतकरापापादिरोगात्करोतिरिष्टंखलुत
त्रवर्षे ४४ सुखस्थानेयदाशौरी: कर्मस्थानेचभूसुतः तत्स्वामिनोचेव

कालेः मातृपितृक्षयो भवेत् ५५ अलंगते भार्गवदेवपूज्येनीचस्थितो लग्नप
तिर्यदास्यात् तदाहि वर्षे कुरुतेन राणां शस्त्रादि घातेन हि तत्र मृत्युं ५६ ल
ग्नाधिनाथोष्टमभावनाथ एकोयदिस्यात् रविमंडलस्थः नसौम्यकेंद्रेभवति
हवर्षेरिष्टः प्रदः सौम्यविवर्जितश्च ५७ मुथाधिनाथोत्तनुभवनाथः छिद्रा
धिनाथो रविभौमयुक्तः तदाहि वर्षे कफपित्तरोगो क्षयो भवः स्यात्तनुसंक्षयश्च
५८ छिद्राधिनाथो विमल[illegible]स्थो यदा नदेवप्रवदन्ति सन्तः यद्याष्टमस्थो यदि
लग्ननाथे महद्भयं भूपकृतं च कष्टं ५९ चेज्जन्मनाथो विबलो मृतीशो ल
ग्नेगतो भास्कर हृस्य मूर्तिः शस्त्राभिघातो बहुधान राणां कष्टं शरीरे मर
णोत्तनुत्वं ५० कन्यासंस्थे सप्तमेंदुः सपापे लग्ने सप्यो भार्गवे छिद्रगो च नूनं
चान्यत्कामिनीसंगमाश्च कस्मादुच्चात्मान वक्षापि मृत्युः ५१ अथ सर्पदंश
नयोगः निधनभवननाथो व्ययभावे नराणां व्ययभवनपतिश्च मृत्युरोगं
करश्च पिरहेन्ता ५२ क्रूरान्वितेहितसुतेमृगगगिन भीतिश्च द्रान्विते धनसुखं
नृपतेर्नराणां सौम्येक्षहृष्ट सहितेनुत दृष्ट दगंध निर्वेधने हनन मारणाम
त्युसंस्थे ५३ भूपुत्रान्वितचंद्रमानि धनगो गुप्तेहि दुःखं भवेत् पापेहिष्ट
भावेयदिस्यात् तनुभवनपतिश्च निर्बलोर्यजिवर्मेभुजंगाद्दशनमृत्युः ५४

वपुस्थनिधगेजीवेचभूपाश्रयात्सुतं स्थैर्यंचदृढंतुजंभयंमृत्युस्ततोप्येषादि

ज्यो॰ रोगान्मृतिःस्यान्नदेहजन्मलंजंम   मृजिपतोपापानि दृष्टेमृतिः ५४ त्रिराशि

पोभास्करमंडलस्थःषष्ठेव्ययेवामृतिभावपातः त्रिदोषतोसौविविधैःप्र

४ कारैकरोतिरिष्टंप्रवदन्तिसंतः ५५ लग्नाधिनाथोरविमंडलस्थोलग्नेयदा

नीचगतोग्रहस्यात् व्ययेस्थितोवंधुपतिःसचात्रकरोतिरिष्टं वहुनस्क

रेभ्य ५६ अथदरिद्रयोगः लग्नाधिपेमृत्युगतेऽस्तयातेकर्माधिपोवाय

दिशत्रुभावेधनाधिपेद्वादशगेत्रवर्षेनरंदुरिद्रंप्रवदन्तिसं ५७ मंदे   ६:७

द्वितीयेसुखगेहिमांशुः पापादितेकर्मगतेकुपुत्रेलग्नाधिपेमृत्युगतेच

वर्षेमृत्युविपत्ताः प्रवदन्तिसंतः ५८ अथविद्युत्पातान्मृत्युयोगः लग्ने

भौमेपापयुतेचचंद्रेपुत्रस्थानेजन्मपेमृत्युभावे मंदेयुक्तेकूरदृष्टेत्रवर्षे

नवा विद्युत्पातात्मौनोहिमृत्यु ६० अथदंडयोगः व्ययगोवापिलग्नेशो   ६२म:

व्ययगाःपापसंभवः पीडास्याद्बहुधादंडोद्यपनाशःसदैवहि ६१ पापा   ४

त्वितेजीवयदाष्टमस्थे चंद्रेव्ययस्थेयदिमंदयुक्तेजनदापिवर्षेधनहानि

दंडात् राजस्यकष्टंविविधप्रकारे ६२ कर्माधिपेनीचगतेष्टमस्थेकर्म

स्थितेपापग्रहेयदाच हरंतिराज्यंविपुलंनराणां तदासुखंनाल्पतरंचवर्षे
६३ रंध्राधिनाथेयदिकर्मसंस्थेकर्माधिनाथोयदिरंध्रभावेकूरवगायु
ते कुग्रहेणहृष्टेनृपाद्भयंचार्थविनाशनंच ६४ यस्यान्मतोजन्मनिराशि
नाथेरतनोशनि दृष्टयुतेसपापे तदाहिवर्षेपितृमातृनाशंशरीरकष्टंप्र
वदन्ति संतः ६५ सप्तमेचयदापापाः अष्टमेशुक्रशीतगुतस्मिन्वर्षेभवे
न्मृत्युर्धातुरोगान्नसंशयः ६६ अथविषपातेनमृत्युयोगः षष्ठाष्टमे।
चलग्नेशेरंध्रस्थेभौमचंद्रमः तदादेचविषान्मृत्युः अथवाध्रविदारणात्
६७ अथपतनयोगः कर्मेशोलंगतोरंध्रेषष्ठेचशनिशीतगू तस्मिन्व
र्षेनृपातपात्मृत्यु अथवाउद्वेपातनात् ६८ रंध्राधिपेकेंद्रगतेत्रवर्षेल
ग्नाधिपेवायदिरंध्रभावे षष्ठेशनौचंद्रयुतेत्रवर्षेकरोतिरिष्टंविधोप्रको विरेः ६९ लग्नाधिपेरंध्रगतोसपापालग्नाधिपेचंद्रयुतेषष्ठमस्थे तदाहिव
र्षेनृपसेहृयः क्षोलोधादिरोगेनवदंतिसंतः ७० अथमत्रवामरणयोगः
लग्नाधिपशुक्रयदाषष्ठमस्थेकूरैश्चयुतेप्यथवीक्षितेच लग्नेचभौमे
दुयुतेत्रवर्षेकरोतिरिष्टंसांरघातात् ७१ जन्मलग्नाधिपेगर्भेशोमु

व०घो०
५
यं६

येराश्चालग्नगोयदातस्मिन्वर्षेध्रुवंरिष्टंक्रूरयुक्तोहितेतथा ७२ द्रविणभावप
यवक्रविधूसूतेतनुपतिर्विवलोपिधनाश्चतः तदपियोगभवोवहुदोषभा
क. मरणतुल्यविनाशविधानम् ७३ भौमेयदासप्तमराशिसंस्थे भवेच्छमे
देवगुरौचपातेशुक्राष्टमेचंद्रयुतेऽत्रवर्षेबन्धासयोगभवंचरिष्टं ७४ गुरौ
यदाचाष्टमगेसचंद्रेमंदेनयुक्तोभवतीहमुंथासूर्येबुधेयत्रगतेऽत्रवर्षे
शीघ्रंभवेद्रोगयुतस्यमृत्युः ७५ लग्नाधिनाथोयदिनीचसंस्थोमुंथाधिना
थोरविमंडलस्थः तदाहिवर्षेकुरुतेनराणांरिष्टंसकष्टंउदरव्यथाच ७६
चंद्रेयदाकेतुयुतेष्टमस्थेतस्मिन्नमोरिष्टसमुद्भवःस्यात् तत्रापिवर्षेकुरु
तेनराणांविनज्ञंधर्म्मक्षयापर्वदः ७७ दिनेशनाथोयदिकंटकेस्याद्यु
ध्यतिद्वादशगेरिपौवाचंद्रेयदापापयुतेष्टमस्थेकरोतिनूनंनिधनंहिव
र्षे ७८ लग्नाधिपेनीचगतेयवालेमृत्युस्थितेक्रूरयुतेचवर्षे उद्वेगचिं
तात्वसुखंभयत्रनिरुध्यमानंरवलदिष्टतुल्यं ७९ चंद्रार्कयुक्तेनिधने
चभौमेकलत्रगेधर्म्मगतेकपवेतदात्रवर्षेनवमेचमासेकरोतिरिष्टं
विविधंनराणां ८० सुखस्थितेभूमिसुतेत्रवर्षेविलोमगेसूर्ययुतेयदिस्यात्

राम
५

लग्नाधिपे हि[illegible]गते तथैव घातादिरिष्टं पतनात्करोति ८१ देवेज्ये खलचास
गेहिमहूचिस्त्रयुस्यराशौस्थिते हृष्टो भूमिसुते तनाजिक मते सौरव्यादिनाशस
तः स्वासकाशकरोविशोकजलकष्टकरं दाहृ सौमित्रे स्यान्कलहं करोतिसत
तः स्त्रीपुंसकष्टप्रदं ८२ कन्यास्थिते नीचगते गुरौ च प्रसूतिकाले खलशत्रु
भावे वृषेगतेमीनगते तदेपि करोति रिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ८३ शरीरं क्लेशचा
ज्ञितादृष्टाभयं च शरीरार्तिं स्वासकाशादि बाधा सतं ज्ञानघाघातपातादिक
ष्टं यदा सूते चंद्रयुतेष्टमस्थे ८४ छिद्राधिपे केंद्रगते त्रिकोणे करोति कष्टं
विवंधनारि शूलं विरेचं वमनं च दाहं प्रलापतंद्रादितनोनूनं ८५ शरी
रे क्लेशं स्वासकाशादिकष्टं ज्वरार्तिप्रदं मास्तजाज्जात्र भंगं सक्तद्धनं चांग
नामां च कष्टं यदात्रे चंद्रलग्ने च युक्ते ऽर्कपुत्रे ८६ शूलं विरेचं वमनादिक
ष्टं दाहं तदा शीतलकादिरोगान् घातं तथाघातुक्षयं नाशरागौ भौरेऽर्कजे च चं
द्रयुतेष्टमस्थ ८७ लग्नाधिपे शौरियुतेष्टमस्थे सुरवासिते वा यदि वक्रपाते
पापेक्षिते वा खलुमित्रिपानन्करोति रिष्टं विविधैः प्रकारैः ८८ त्रिराशिमुपाति

त्रि

म

२५

शिजन्मनाथाश्चाऽस्तंगताष्टमगतास्वनीचेतदात्रवर्षेमुरशक्तितोपिप्राप्नोतिनू
नंनिधनंमनुष्यः ८९ छिद्राधिपस्त्वशुभगतोष्टमस्थेलग्नाधिपेचास्तगतेऽत्र
व०पो० वर्षेभ्रमंविरेचंवमनंचदाहंप्रलापतन्द्रादिकरोतिरिष्टं ९० लग्नेनवष्टमेपुत्र
६ गतेऽर्केपुत्रेलग्नाधिपेचंद्रयुतेष्टमस्थेतदात्रवर्षेपवनादिपीडागुल्मा
दिरोगैर्लाभवेन्मृत्यु ९१ चतुर्थभवनेपापाष्टमेव्ययगेथवा त्राभवात
कफश्वासशरीरंक्लेशमादिशेत् ९२ जन्मत्यक्केचाष्टमेशोधनस्थोरंध्रस्थो
वालग्नगोवारिजातपापोयुतेमाहतादिप्रपीडागुह्यस्थानेघातपाताश्चिक्ला
दिकंवा ९३ अष्टमस्थेयदाभौमेषष्ठेभवनेतिचंद्रमावर्षेशत्रुदयंशत्रुशस्त्रा
स्मात्ताधिकेचारकं ९४ लग्नेशोयदिनीचस्थेलग्नेनीचग्रहेयुतेतदाशरीरेपीडा
स्यादथवास्त्रीसुतेभवेत् ९५ निधनलग्नमदोत्यवि धोयेदिकुजशनियुतिव
र्गगतेशितेविविधिशस्त्रभयंज्वरपीडनंतनुक्षयंकुरुतेकफमारुतात् ९६ राम:
भ्रात्टहेशोयदिशत्रुभावेसौम्यग्रहेयुक्तनिरीक्षितेपितदात्रवर्षेप्रकरोति ६
वैरंमित्रात्मकौकलहोनितांतं ९७ रंध्राधिनाथेयदिलग्नवर्तीतनुक्षयंवा
तकफोद्भवात्गुह्येंद्रिपापाद्भुरवेद्युपीडाकंटाऽवरोधंकथितंमुनिंद्रैः ९८

सहजगोद्वितिनंदनवर्षपोभवतिटकेजुयुतोवहुकष्टदः सहजवैरिकृतंचरिपूद्भवं
भवतिवातभयंसततंन्नृणां ६९ समुच्चयुताजिके रंध्रालयस्थायदिपंचखेटाः ष
ष्ठाधिकेवायदिनीचयुक्तास्तदात्रवर्षेशराशिर्यदिम्नत्युभावेतदात्रवर्षेप्रकरोति
रिष्टं राजाहतेवाणवदंतिसंत २०० वर्षाधिपेशशिसुतेयदिम्नत्युभावेस्थ्येति
जैविनिसुयुतेगेसपापेचंद्रेक्षितेप्रकुरुतेमरणंनराणां केंद्रादिरोगेःप्रवदंति
संत ०१ ततोयदारंध्रगतेऽर्केपुत्रेवर्षेषषष्ठशराशिर्यदिम्नत्युभावेतदात्रवर्षेकु
रुतेनराणां भुजंगमस्यस्पर्शनेनरिष्टम् २ तदायदाचंद्रपदेम्रगांकरविक
राशौखलपापयुक्ते लग्नाधिपेम्नत्युगतेत्रवर्षेकरोतिरिष्टंहिजलोदरेण ३
त्र्ययदाभुवनेनवमेष्टमेखलखगाःप्रयंततियदाखलवसात्कृतचोरकुकर्म
तोभसिकामवसादपिहस्यतां ४ स्त्रजैपसुखायांम्नकलत्रनाथा त्र्यदोषिद्रगाःक्रूर
युतेचिताश्चम्नत्युप्रदाथ्यार्कजअंदुम्नत्युर्लरिगिम्नत्युप्रदेषात् ५ पापालोकीतयोःसि
तोवजिजयोरलंगनोवहूरुकचंद्रेककर्केटवृश्चिकंशुकगतेपापेर्युतेगुहारुकु चि
त्रैरिपुधनव्ययेरस्तभयोश्चंद्रोदयस्थोरिपोचंद्रेखेऽवनिजेस्तगेचविवलेपद्यार्के
त्रैवेशिगे ६ रुकपञ्चाधिपतिःखलैर्यदियुतोदृष्टोरुग्गार्तिप्रदः सौम्यैश्चेद्युतिवी
क्षितोवलयुतोरोगार्तिनाशकृत् ७ लग्नोचाष्टमगकुजेविधिसुतेस्यान्म्नत्युरु

च्छस्थितो मंदारो चाष्टगौ वा भवति हि मृत्युर्लग्नजो रिष्टकस्स्यात् ७ बुधान्मृत्यु।
गतौ पुत्रा खलखगौ तौ जीवार्य्ये दिगास्ते चाष्टमगाने यावलखगैर्युक्तो हिताय
व॰यो॰ युक्ताः ८ मदे पदापदेष्ट नस्थे तत्र्यास्थितो पापयुते गृहे च पापेन युक्तो मृत्युं करोति रिष्टं
७ मृत्यादि घातेन वदंति संतः ९ अथ गजान्मृत्युयोगः ताजिकस्य मृत्यये यथा
ष्टमे जन्मलग्नाभवेतो रवीचंद्रकौ पापापयुक्तो तदा मृत्युः गजदोषान्न
संशयः १० अथ मातृजो मरणयोगः पवनुताजिके सहजभावपतौ रिपुभा
वगे रिपुपतौ सहजे यदि संस्थिते तदिह वर्षगतो हि स्वभ्रातृजो भवति शस्त्रह
ते शिरच्छेदन ११ हर्षेश्वरे हायनलग्ननाथस्त्राष्टगः क्रूरः युतः करोति मृ
त्युर्दशायां शुभ दृष्टयुक्ता फलं न दद्वृत प्रतिमं करोति १२ लग्नाधिपे रंध्रगते
स भौमे रंध्राधिनाथे व्ययगे रिपुस्थे करोति रिष्टं द्विवनो विवादात भृत्यादि घाते राम॰
न तथैव रिष्टं १३ विस्थानस्थे कर्मगे भूमिपुत्रे क्रूरे युक्तो वीक्षितो वा तदा द्विलग्नस्वा ७
मि रंध्रगो उर्ध्वपातान्मृत्युं रिष्टं मानवानां हि वर्षे १४ जन्मलग्नपति वर्षगामे क्रूरयु
क्तहायवविलोकितो मृत्युपव्ययरसाष्टमस्थिते शस्त्रघातकृत् जनतदा हि १५ सुखेय
दा नीचगते द्रष्कूलेसु खाधिपे नीचगते कलत्रलाभाधिपे मृत्युगते शत्रेऽत्र वर्षेक

रोतिरिष्टं च चतुर्भमासे १६ प्रसूतिकाले खलु जन्मलग्नं तनदृष्टकेलग्नगतेनरा
णां केन्द्रोदयेवाहुवलेप्रतापैर्दृष्टैः कृतेकेष्टभयेन नृपात् १७ वर्षेष्टकेकोर
णांकेन्द्रोदये वाहुवले ... यदिस्युलग्ना
घविलोमसंस्थेराहौ भवेद्दृष्टिविनाशकं तुष्टुभाग्ययोगावहवायदिस्युलग्ना
प्परिष्टं प्रवलत्वमेति १८ मकरत्रयेलाभरिपुत्रिसंस्थैः केतुस्तुहेतुर्निधनोपशा
न्तेः परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेपिहरन्तिकष्टं १९ रोगमनाजिके
मुथादिनाथोयदिमन्तुभावे षष्ठे च मुथा भवति हि वर्षे तदाप्यरिष्टं कुरुतेंग
पीडासहोदरैस्तुल्यं कृतेहिरिष्टम् २० सौख्याधिपेरिव्ययगे चतथाष्टमस्थेपा
पान्विते ऽत्र जन्त्वयं हि वदन्ति तज्ज्ञा २१ मुथाधिनाथो यदिलग्ननाथवषाम
क्रूरयुक्तः करोति मृत्युं खपाकेषु मेहृद्दृष्टोयुक् चेत्फलं तदर्द्धं कथयन्ति संतः २२
कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे धनाधिनाथो यदि पंचमस्थः तदा नराणां धनधा
न्यलाभं शत्रुक्षयं रिष्टहरं तिवर्षे २३ कपालितिप्रदंमाननीकव्यमंगेशरीरं कशमा
स्तनाशात्र भंगे विरिश्चतत्क्षामलीपंचववर्षेयदा चार्केजो लग्नगे चंद्रयुक्ते २४ सीत
स्थिते देवगुरौ च केंद्रे पापैर्नयुक्तोप्यथवाविलोकिते तदा विनाशं सकलं च रिष्टं
तमोयथा भास्करदर्शनेन २५ धनाधिनाथो व्ययभावयातो व्ययाधिनाथो

न्यतिभावसंस्थः तथाहि वर्षे शिवपूजनीयं तद्वर्षमध्ये चनृपाधिस्यात् २५ दि
नायस्थोयराहुः वहेशे स्थितोथवारिपुरोगं विनश्यति स्वकुलेवनृपोतमः
२६ भौमेयदाजन्मनिचाष्टमस्थे वर्षे च पापे दशमास्थिते च नीचर्क्षगेवारविमंडि
तो स्थितदार्थनाशं ततुरिपुनाशनं २७ मुंथापतिर्लग्नपतिर्युतश्चमृत्युस्थितो मृत्यु
समं च कष्टं गुह्येंद्रियेवाहुधिस्प्रकोपकं दावरोधं कथितं मुनीन्द्रैः २८ कलत्रना
थोव्ययगो समंदे कलत्रपीडा कथिता ऽत्रवर्षे लोकापवादं स्वजनेषु वैरं संतानपी
डा मननव्ययश्च २९ लग्ने यदा राहुकवी भवेतां लग्नेशमृत्युश्च यहे गतोवापाना
दिकर्मात थेव निन्दितं पिशुन्दितो नीचग्रहेवदंति ३० नीचस्थितेजन्मे लग्ने भौमे
युक्ते यवीक्षिते तदाकष्टं जानीयात् त्रिंगोकष्टं विशेषतः ३१ भ्रातृनाथायदा
वर्षे पापयुक्वीक्षितोथवा तदा भ्रातृ भवेत्पीडाविविधं कष्टदायकं ३२ व्ययास्थि
ते मंदयुते तदावर्षेत्र याधिकं प्रजते कुरुते वैरं परेषु तु खदायकम् ३३ अ
र्थामि... मृत्युयोगः मुंथाधिनाथेसहजेशयुक्ते सौम्यैरयुक्तेचतिरीक्षितेवा
तदाहि रिष्टं रिपुभिर्विवादं भिताह्निपातनकरोतिमृत्युं ३४ कर्म्माधिपतौ चगतेष्ट
मस्थे कर्म्मस्थिते पापग्रहे हि नूनं हरेत्स्वराज्यं विपुलं नराणां सखं सुखं कार्य्यहं

Margin left: व॰ यो॰ ८

Margin right: राम: ८

वै

वि

चपुंसा ३५ रंध्रादिनाथे यदि कर्म्मसंस्थे कर्माधिनाथे यदि मृत्युभावे क्रूरेक्षितो
क्रूरयुतेऽत्र वर्षे नृपाद्भयं चार्थविनाशनं च ३६ एकोपि पापोष्टमगो रिगोहि पपोहि
तो लग्ने [illegible] धूमे वा तो युद्धा रसौ पंथा पिव्येन पीतः नूनं नरो सोयमसद्म याति ३७
सौम्यस्य [illegible] नूनं यदि कर्म्मसंस्थः षष्ठाष्टमे वा भवमे विनाशात् चंद्रेण युक्तो
पि चतुष्टये च जातस्य जातो प्रकरोति रिष्टं ३८ निधनलग्नमंदोत्यरिपुस्थितो
यदि विधुः खलखेटयुतेक्षितः यमकरे विदधाति नरस्तदा यदि न पश्यति देव
गुरुमंशं ३९ अथ कलत्रभावविचारः सप्तमस्थो यदा राहु भौमश्चंद्रसमन्वितः
स्वामिः लोकणा भवेन्नूनं नास्तीति धनं ध्रुवं ४० कन्यालग्ने भृगौ वे मूर्तिसंस्थे जाया
भावे वा कुजे पापयुक्ते तस्मिन्वर्षे मानवानां च कष्टम् भार्य्या भ्रंशुर्निश्चितं त
त्र वर्षे ४१ सप्तमस्थो यदा राहो भौमश्चंद्रसमान्वितः कलत्रेशो यदा नीच दास्त्री
निधनं भवेत् ४२ शनैश्चरे भौमपदे स्थितश्चान्यापेक्ष्य युक्तो हि जितसप्तमस्थे
तदा कलत्रस्य करोति नाशं धनस्य हानिं सततं कुमार्गात् ४३ व्ययालये वामद
नालये वा लग्ने बुधालये गो हिमांशुः कलत्रहीनो मनुजस्तनूनं विवर्जितः स्या
दिति वेदितव्यं ४४ सौम्या सप्तमगा बलेन सहिताः कुर्युः सुखं योषितां दुष्टाश्च
ल्पसुखं शशांकसहिताः स्त्रीतोऽतिशं दुःखदा दैत्येज्योत्स्वपदे विवाहजं सुखं क

षे कुजयोर्धितां द्रव्यस्थो रविजः करोति कलहं ज्ञातात् कविः क्लेशकरः ४६ जा
याभावपतिस्तथा स्वपतिः लग्नेथवा सप्तमे सौम्यैर्विलोकिते च सहितेथवं ।
वं॰यो॰ ८ गारयोगः प्रदः स्त्रीणां सौख्यसमागमः प्रकुरुते स्त्रीवर्गतो लाभदः रोप्यं रत्न
हिरण्यवस्त्रादिसहजलं सद्भूमिलाभं सुखं ४७ द्यूनेशो यदा चंद्रगो वीर्ययुक्तः
शुभैः संयुतो वीक्षितो वा नराणां कलत्रसौख्यं धनलाभं सुपुण्योदयं शना ।
शं करोति ४८ कलत्रभावे यदि देवपूज्ये सौ चेगते वा कुसंयुते वा तदा च वर्षे
धनधान्यलाभं हेमांबराद्यं नृपतेश्च मानं ४९ अथारिष्टभंगाध्यायः केंद्रे
त्रिकोणभवने शुभाहृधिपे च लाभगेहे भवति चेच्छुभदृष्टयुक्ते लक्ष्मीप्रवृ
द्धिं च लभिप्रलार्चकीर्तिः राज्यात्सुखं भवति बंधुसुतादिसौख्यं ५० सहजभाव
पतिः सहजस्थितो वा बुधगुरुदृष्ट यदि शुक्रसमन्वितः सकलारिष्टहरो ग्रहको भवेत् यदि
च ह्यलग्रहे विजयं तथा ५१ एकोपि जीवबुधभार्गवकेंद्रमध्ये नीचारिमेसरा राम ८
हरतोऽश्च भवंति सौम्यः उच्चस्वमित्रादियुहे प्रपन्ना दुष्टग्रहारिष्ट हरंति वर्षे ५२
कर्माधिनाथे यदि कर्म्मयुक्ते सौम्येन दृष्टेप्यथ सौम्यदृष्टे लग्नाधिनाथे यदि
पंचमस्थे सौम्येन युक्तेप्यथ वीक्षितं च हरंति रिष्टमु सकलं नराणां पद्यस्तगो

नीचगतोपिवास्यात् ५२ त्रैलोकताजिके
जन्मांवुपेनसहितेचनिरीक्षितेच लाभाधिपेवलयुतेधनकोचचंद्रे।
तिरिष्टगतांनिर्जाते ५४ ताजिकलतापात रंध्राधिपेयवलगोयदितत्रवर्षे ऽनकतहरि
र्धगोभवतिचाष्टमभावमध्ये सौख्यप्रदंधनवहुलंविशालंमित्रागमंसक।
लरिष्टहरंतिवर्षे ५५ अथवामनताजिके नीचस्थितोजन्मनियोग्रहःस्यात्तद्वे।
स्थितेवायदिमित्रदृष्टः राजाधिराजकितयोगजातधनप्रदोवावहुलप्रतापा
ते ५६ लग्नाधिपेकेंद्रगतेवलिष्टेसौम्यैक्षितेवासहितेत्रवर्षे लग्नाधिनाथोयदिकेंद्रगोवास्योजव
लरिष्टनासंगुप्रंहि सौख्यंकथितंमुनींद्रैः ५७ यदिधिहिमशोनिजभाववर्तितः धनस्यलाभंख
सौख्यगतोमित्रशुभैश्चदृष्टः दृढतिलाभंगजरत्नहेमप्रवालकाद्या खलुरिष्ट
नोसं ५८ सुखाधिपेसौम्यखगेवलिष्टेलग्नाधिपेलयदिरवेटः युक्तत्रवर्षे
गजवाजिलाभं शरीरसौख्यंविवीधप्रकारैः ५९ लाभायसौम्यगतेऽष्टयेच लाभ
स्थितेवायदिसौम्यपुक्तौ उभौनभस्थकुरुतःसवर्षेहरंतिरिष्टंकथितंमुनीद्रैः ६०
स्त्रीविलासकलपकेंद्रगताशुभग्रहाः रिपुस्तृतिव्ययभावविवर्जिताः धनप्रदंव
हुलेकुरुतेसुखंस्त्रीविलासंसुखंरमतेनिशं ६१ सहजभावपतिसहजास्थितेवुध

गुरुर्यदि शुक्रसमन्वितो सकलरिष्टहरः स ग्रहः कोट्ययं यदि च त्रसंज्ञग्रहे विजयतां ६२
जन्माधिपे सूर्यभावे सपापे दग्धो रिष्टं चिंतनीयं हि पुत्रे नष्टा सुतो सूर्यनाथान्वितं
भवर्षे मंदारान्वितं स्यात्फलं न तन् ६३ द्यूनस्थिते सप्तमभावनाथे बलेर्दितेस्त्रीति
सुजनप्रवादः शनैश्चरे वाथ दिपंचमस्थे कलिर्नदाने विटायां तरेस्यात् ६४ यदि
सुखाधिपतिः बलकेंद्रगः प्रशवलग्नपतिर्हि बुधान्वितः धनसुखं क्षितिपालवा
नो लाभेसुतसुखं यदि सौम्यसमान्वितः ६५ राराजानं हि बुधगुरू विधुकामि
र्युतो यदा भवति करते कांचनसद्धिः यदिन कुज न्मापुरो वर्ती ६६ सुखपतिः
सबलो थ सुखानुगो बुधरेज्यशशिनेर्युतः सविदधाति निसुखं विपुलं धनहरंति
रिष्टं गुणां विपुलं बुधाः ६७ अक्षाधिनाथे रव १० गते बलिष्टे सौम्यान्विते सुस्या
नुयशो र्थलाभः शरीरसौख्यं मनसीप्रहर्षं स्वर्णादिलाभं भवतिय वर्षे ६८ दशम
भावगतेयदि भूसुते सुखगते सुरनायकपूजिते तनुगते यदि तुंगयुते रवौ सकल
पार्थिवपूजितविक्रमः ६९ केंद्रस्थिते जीवयदा वशिष्टे सौम्यग्रहैर्युक्तविलोकि
तेवा तदात्रवर्षे धनधान्यलाभं लग्नाद्भवं रिष्टविनाश्यते ध्रुवं ७० लाभग
तीये यदि सौंहिकेयः सौम्यैर्ग्रहैर्युक्तविलोकितेवा तदा च रिष्टं कुरुते विनाशं।

लग्नोद्भवं वा मुथहाकृतं च ७१ मुथाधिनाथे सहजालयस्थे तत्पेन सौम्येक्ष युते।
क्षिते च तदात्र वर्षे खलु रिष्टनाशं भ्रात्यालयं सूर्य्य निरीक्षिते च ७२ लग्नाधिपे।
भवति भौमयुते च कर्मे कर्म्माधिपे भवति केंद्रे त्रिकोण सौम्येक्षि प्रकुरु
ते निज वंश मध्ये तुल्यं तथा राजपुरुषं प्रवदंति संतः ७३ तृतीयस्थ मुथके गुरौ धर्म्म
चारी विधुं तं रिपु स्थोयदा लग्नवर्ती प्रसन्न स्यवृद्धि ग्रहा कीर्तिलाभं तदा रिष्टना।
शं भवे च कुलतुल्यः ७४ जन्मपे गुरुयुते च कंटके लाभनाथ सबले विलोकिते
तद्गृहे समवरिष्टनाशनं मेघकारमिव भास्करोदयात् ७५ कर्म्मस्थानि भार्गवे सौ
म्ययुक्ते मूर्त्तौ जाते देवपूज्ये स्वचंद्रे तस्मिन् वर्षे भूपतेः छत्रयोगः प्राज्ञाश्चैवं सा।
क्षियोगं वदन्ति ७६ समाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे शशांगनाथो यत तु च नाथ के
न्द्रस्थितः सौम्ययुते च लाभे रिष्टं विनाशं सुखमिष्टतुल्यं ७७ समाधिपो वा तनु नाय
को वा वीर्याधिके सौम्य कुर्मेटे रवे युक्ताः पश्यन्ति लग्नं किल सत्र वर्षे स्याच्छोभनं
रिष्ट विनाशनं च ७८ मुथाधिनाथो यदि केंद्र संस्थे लग्नाधिपे कर्म्मगते बलिष्ठे
धूनस्थित कर्मयतो हि वर्षे मुथाकृतं रिष्टं हरंति नूनं ७९ कर्म्मस्वामि कर्म्मगे सौ
म्ययुक्ते लग्नस्वामि केंद्र संस्थितदनी मित्र लाभं भूपवर्गाच्च लाभं शत्रोन्नाशं

त्वंगतानांसुखंच ८० जन्मलग्नतपतिर्वर्षलग्नतः केंद्रकायनवपंचमेगतः रि
पुकष्टशकलंविनाशयेद्धर्मकर्मवहुलाभदायकः ८१ केंद्रत्रिकोणगतेदि
नाधेशुभंर्यमेतकालेतदाहं शत्रोर्विनाशंधनधान्यलाभं यशःप्रदत्तेखलुरि
पुनाशं ८२ केंद्रेयदाजीवगतेत्रिकोणेलाभेन्टनीयेयदि[illegible]सेहिकेयतदात्र।
वर्षेसकलंचरिष्टम् हंप्रवीणोकथितंमुनीन्द्रैः ८३ सौम्यस्त्रियोलग्नगतायदि
सुःकुर्वंतिजातंन्टपतिंविनीतं पापास्त्रियोदुःखदरिद्रशोकेयुतनितान्तंवहुभा
ष्यकंच ८४ लग्नेचलाभेसहेचकेंद्रेचेद्वर्षकालेसुधाहाधिनाथः करोतिपुंसो
विपुलंप्रतापंमैत्रंन्टपैः सन्मतिवर्द्धनंच ८५ प्रसूतिकालेखलुजन्मलग्नंतद
द्दके लग्नगतेनराणांकर्मोदयंवावहुलंप्रतापंदुर्बेकातेकष्टभयंनभूयात्।
८६ षष्ठेरिनाथोयदिद्वादसंस्थोक्रूरग्रहेयुक्तयदिवातिसौरीः तर्हिवर्षेप्रकरो
तिशीघ्रंरिपुस्यनाशंकथितंमुनीन्द्रैः ८७ सौख्याधिपेजन्तुविशरणेवलेत्रकेंद्रेला
भेन्टनीयभवनेखलुसौम्ययुक्ते सौख्यागमंचयंखलुशत्रुनाशंभूपाज्जयंचखलु
मातसुखंचवर्षे ८८ मासुग्रहेशोयदिशत्रुभावेलाभालयेलाभयतेनराणांसु
तस्यसौख्यंप्रमदाविलासरिद्धिर्विनश्येपस्ततंहिवर्षे ८९ लग्नाधिनाथोयदि

शत्रुभावेश्वरको यदि स्यात्तनुभावमपापयातः तर्हि वर्षे प्रकरोति शीघ्रं यश्मादिसौख्यं
नृपदत्तमानः ८० तृतीयस्थो यदा राहुः षष्ठे सौरिगतेथवा रिपुरोगा विनश्यन्ति स्वकु
ले कीर्तिमाप्नुयां यात् ८१ त्रिषडायगताश्चेपापा धने सौम्यः शुभेक्षितः तदा वर्षे विज्ञा
नीयात्मैत्री स्यात्तु नृपोत्तमे ८२ यदार्कपुत्रो बलवान्व्ययस्थः सौम्येक्षितो वाप्य
थ सौम्ययुक्तः तदा नराणां बहुकष्टनाशं शरीरसौख्यं कथितं मुनींद्रैः ८३ ह
र्षस्थाने संस्थितश्चार्कपुत्रो सौम्यैर्दृष्टः साधिकारे बलिष्ठे जीवे केंद्रे वीर्ययु
क्तोऽत्र वर्षे शत्रोर्नाशं भंगंगं करोति ८४ जन्माधिनाथो यदि सौम्ययुक्तो मु
थाधिनाथो हि गतस्त्रितीये तदा हि वर्षे कुरुते नराणां सुखं च रिष्टं विलयं
ग्रहाणां ८५ त्रिराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो नवपंचमस्थः त
दात्र वर्षे प्रकरोति सौख्यं हरंति रिष्टं विपुलं च ग्रहाणां ८६ त्रिराशिनाथो यदि क
र्मभावे कर्माधिनाथो नवपंचमस्थः तदा वर्षे प्रकरोति सौख्यं हरंति रिष्टं कथितं मु
नींद्रैः ८७ यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा केंद्रत्रि
कोणायगतस्तदानीं सुखार्थलाभं रिपुनाशं सकलं नराणां ८८ केंद्रत्रिको
णे च तदा तृतीये स्वोच्चे स्थिते भूमिसुते धनाथो धनस्य लाभं किल रिपुन

मुहूर्तेषष्ठगते हि मदेन नराणां नस्मिन्तमे मथुनिरिपुनिजेशशं भूवि सुः ल-
रह्नेतिमेव रिष्टं १९ लग्नाधिनाथो यदि तमस्थे कलनाथे भवतो हि वर्षेलो-
उनेन तदा हि वर्षे सकलार्थसिद्धिं हरेति रिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः २० शुभे मुहूर्ते सौम्य
लग्ने च भाग्येस्वि जेस्यान्द्रष्टशालादि योगः राजप्राप्तिः श्री विलाशादि सौख्यं रि
पुकष्टादिनाशं २१ वाचस्पती धर्मगतेन राणां सौम्यग्रहे पुक्त निरीक्षिते
च तदा हि वर्षे खलरिपुनाशं नमो यथा भास्कर दर्शनेन २२ त्रिधर्म कर्म
रसौम्ययुक्तैराज्याप्तिप्राप्ति र्बहु चार्थलाभं करोति राज्याप्त सकलार्थ सिद्धिं हरे
च्चरिष्टं कथितं मुनीन्द्रै २३ प्रश्नेतिकाले किल लग्ननाथे वर्षे यदा केन्द्रगतो न
राणां तदा हि वर्षे धनरत्नलाभं हरंति रिष्टं कथितं मुनीन्द्रै २४ रा को पि वर्गोत्त
मगो ग्रहेन्द्रः स्यौरन्ध्रे वाजन्मनि वर्षमध्ये अरिष्टनाशं यमनो निहंकंदला
नि वायुर्विभवस्थिरं च २५ अथ मासफलानि ॥ लग्नाधिनाथो खलु रंध्रना राम
थ एको यदि स्यात्तवरं घ्रभावे न दा हि मासे रुधिरप्रकोपं शरीरकष्टं विविधैः २२
प्रकारैः २६ मासे भ्वरो लग्नगतः करोति धनागमं संततसौख्यमेव कर्मोट
यं वा बहुलप्रतापं शत्रुक्षयं स्यात्तव तु मासमध्ये २७ मासप्रवेशकालेपि ग्रहा

न्मावाप्यथाधयेत् तत्रमासतनौनाथो मुंथेशोजन्मपलया २८ त्रिराशीपो
ननिशारविंदमपतिस्तथा अब्दप्रवेशलग्नेशरवाविपर्योधिकस्तु २९ प
शेपुन्मासपतिश्चेयस्ततोवाच्यंशुभाशुभं अपरैर्मासलग्नेशंमासाधिपतिमू
चिरे ३० दिनेशंदिनलग्नेशंतथाप्रोचुर्विचक्षणाः मासप्रवेशेयाजन्मनिल
३१ ग्ननाथकलत्राधैर्मासांगपतिर्द्वितीयः त्रयःपुरोक्ताश्चपंचमध्येमासाधिपोह्य
पूर्ववत्कार्यः ३२ अपमर्थः पंचाधिकारिणांमध्ये जन्मलग्नपस्थाने वर्षलग्न
पःस्याद्य वर्षलग्नपस्थाने मासलग्नपस्थाप्य मुंथेशस्थैराशिकेशस्त्रंद्राकेश
शीशाः पूर्ववन्मासलग्नेनोज्ञयः एवंपंचाधिकारिणांमध्येवर्षेशवत् मासपः
कार्य्यः ताजिकभूषणे लग्नेशराश्यधिपतिर्विलग्ननवांशनाथोनसमंसखित्वं
स्तेहाएव्यहृष्टीश्चयुतिश्चमासेशुभंध्यात्पतेस्तथास्मात् ३५ लग्नेशराश्यधिपती
विलग्ननवांशनाथश्चजनपोबलीयान् सर्वैवमासेश्वरतांप्रयाति फलंतदीपंकि
लकीर्तियाति ३६ अथसूर्यादिनांमासेश्वराणांफलानि प्रवीरतालाभपतिर्वा
होत्सर्वंनरपतेर्गुरुगौरवमादिशेत् अधिकतोयदिमासपतिर्भवेदिनकरोति
रिपुदयं ३७ रजितमौक्तिकहेमसुदंवरंप्रियजनागमनं सुखमद्भुतंन्टपकृतं

सादद्यदिमाशपतिः द्विजपतिर्जयतीर्थ्येहि विदिशेत् ३८ क्षितिपतिर्द्रवीराणागम
रारिपोहि चयं पचपंचरणांगणो अनुदिनंननुमासपतिर्भवेत् रिपुजयंप्रको
पतिनिरंतरंयदि बुधः खलुमासपतिर्भवेत् ३९ बहुविलाससुखैः सहितंकु
रीस्वजितरांवरवस्त्र धनागमैः अपिनरंननुमासपतिर्भवेत् सुवचसांपतिसु
रभेमतिः ४० निजजनोपचयस्त्रजायः सदासावनयोरुचिराङ्गनः रतिपतिर्भु
दिमासपतिर्भवेत् कविरहोविरहोरिजनेध्रुवं ४१ कुमतनापरिसेयदासाद्रो
वरनरोनृपगोरखमूविलनैः सहितोयदिमाः पतिरविभवोन्यसखान्वितः ४२
हिकनपथस्यानयानुमानेनफलंमकल्पं ४३ वामनः लग्नेश्वरोशनाथस्य
लग्नांसस्वामिनायदिसुहृत्वस्नेहदृष्टोथ्व चेदप्तिमयोर्युतिः ४४ सौख्यंशरी
रमारोग्यंपतिवृतिश्वयदा भवेत् शत्रुदृष्टिमयोश्वेद्रः क्रूरदृष्टिः परस्परं ४५ नरा
शरीरेकष्टस्याच्चितोद्वेगस्तस्थैवचहृयोरेकान्नगोनीचस्थयोश्वद् मृत्युविनि
र्दिशेत् ४६ लग्नेशाधिपतिः क्रूरयुक्तेंशाकाकरः स्मृतः ४७ अवजन्मोदका
योरिच्छियोगोमतोएवंचमासेमृत्युर्भवेत् अन्यथास्तुसमंकष्टंवाच्यमि

लग्नेश्वरांश[...]थस्य सुहृज्जांशेश्वरेणाचेत् मैत्र्यादियोगश्च तदा सुहृत्सौख्यं तदा भवेत् ४९

त्रिविशेषः ५० अथ मासफलं लग्नांशनाथस्य यदा धनांशस्वामिना भवेत् मै
त्र्यादियोगश्च यदा तदा द्रव्यं भवेद्बहुः शत्रुयोगैः क्रूरदृष्ट्या नीचस्तगतयोस्तयोः ध
ननाशश्च भवति धनं तत्स्वामिनोवशात् ५१ लग्नेश्वरांशनाथस्य सुतांशस्वामि
ना यदि मैत्र्यादियोगश्च तदा सुतैः सौख्यं प्रजायते ५२ लग्नेश्वरांशनाथस्य षष्ठांशस्वा
मिना यदि मैत्र्यादियोगश्च तदा सुतु शंधिस्तदा भवेत् ५३ लग्नेश्वरांशनाथस्य सु
हृदंशेश्वरेणावत् मैत्र्यादियोगश्च तदा सुसौख्यं तदा भवेत् ५४ लग्नेश्वरांशना
थस्य सुतांशस्वामिना यदि मैत्र्यादियोगश्च तदा जायासौख्यं तदा भवेत् ५५
लग्नेश्वरांशनाथस्य मृत्यंशांशेश्वरेणाचेत् मैत्र्यादियोगश्च तदा सुख्यसा तदा
सुखं ५६ मृत्युस्थांशपतौ वीर्ययुक्ते कष्टं विनिर्दिशेत् लग्नांशनाथस्य यदा धर्म
स्थांशेश्वरेणाचेत् मैत्र्यादियोगश्च यदा मासे धर्मे रतिर्भवेत् ५७ कर्मांशांशपतेश्च
त्वं कर्मसिद्धिः कुतोचिंता अथैशांशपतेरेवं लाभस्थान व्यवहारतः ५८ लग्नांशाशे
षे भावांशशनियोवलिनाशुभाः ५९ अन्येनेश्वरांशनाथ स्वयं भावांशस्वामिनास्ने
हदृष्टियोगो वा चंद्रस्यापिस्नेहदृष्टियोगो वा [...] सुखं स्वं लग्नेश्वरांशनाथस्य
तदा ह्रावपदार्थेनासुखं वा चं पुनर्भावांशस्वामि दुष्टस्वा योगो वा तदापि सुखं

...मनस्थमे उच्चंच या...

१ वेलग्नेश्वरांशनाथस्य वक्रवांशस्वामिना कृ ८३ २ अथ चंद्रस्य चंद्रस्यापि कूर दृष्टि

वं॰ यो॰ तदा लाभो त्यदुःखं वाचां श्यापि त्वि हदृष्टिपी भोयातनामनसा मासुखं वा

भवेदेवतावन्कालभवेदिदं परस्परं तानं चार्य्यमासे यत्फ वदेत ८२ अथमा

२५ मासेषु मासु भयोगानि तृतीयस्थो चंद्रस्तु हो सुखस्यायदि भार्गवः तदामा

से सुखं दद्यात् विघ्न धृधादीन सर्वलग्न स्थिते देवगुरु स्थयं स्थवु धर्मोर्गवो तद

मासे भवेल्लाभं धनधान्यात्पोत माव ८४ तृतीयस्थायदा स्थितो कर्मस्थे

च तस्यतो तदामासे सुखं दद्यात् छिद्रकष्टादिनाशनम् ८५ चंद्रान्ते च मगाजी

वान्ते वमगाशशी तदा रिष्टं न कुर्वीत रिपुरोगप्रनाशनं ८६ चंद्रात्सप्तमगा

जीव यदि वजी वसमन्वित जीवयोगं विजानीयात्तिरापुः सपदा सुखं ८७

मूर्तिस्थो च यदा चंद्रस्तु कोदें वजं वीक्षितो तदा मासे सुखं भूरि धनधान्य

सुतो द्विजं ८८ नवमस्थो यदा भौमस्तु थापतिपंचमे तदा रिष्टम् न कुर्वीत राम

तपथो स्तनमुपेक्षता ८९ नवमस्थो यदा भौमस्तु गुरुस्तो यदा भवेत् तदा २५

मासे सुखं दद्यात् छिद्रकष्टादिनाशनं ७० तृतीयस्थो यदा भौमस्तु सुतो य

संयुतः तदामासे महालाभं धनधान्यं स्त्रियासुखं ७१ लग्नाा
नाथो नवमे भाग्यनाथो विलग्नगः तदामासे सुखं लाभं महाभाग्योदयो भवेत्
७ व्ययरिपोगः सप्तमे स्थो यदा चंद्रः राहुरायदि संयुतः तस्मिन्मासे महान्के
स्त्रीरोगं कष्टं विशेषतः ७३ अष्टमस्थो यदा चंद्रो भौमेन यदि संयुतः तदा
द्रियेपीडा रुधिरस्य श्रुतिर्भवेत् ७४ चतुर्थस्थो यदा सूर्यो दशमे पापखे
तदा राजा भयं कुर्यात् तस्मिन्मासे विशेषतः ७५ चंद्रमूर्तौ यदा राहुर्युतो चे
शेषतः तत्र मासे शरीरे च क्लेशानां ज्वर पीडनं ७६ अष्टमस्थो यदा सूर्यो ज
न्मलग्नेपनिर्युतः तदा गुह्येंद्रियेपीडा परितापफलप्रदः ७७ अथ मासेश फला
ति मासेश्वरः केन्द्रगतः शुभ नरस्थो युतो वा बहु कष्टनाशं करोति सौख्यं विवि
धेप्रकारे धनागमं कीर्ति विवर्द्धनं च ७८ मासेश्वरः पंचमगः करोति धनाग
मं संततिसौख्यमेव संतान नाशं यदि चाष्टमस्थः संतानपीडा खलु तत्र मासे
मासे ८० मासेश्वरः शत्रुगतः करोति रोगागमं वाहनवित्तहानिं शत्रुदयं का
र्य विनाशनं च प्रमेहपीडा कथिता मुनीन्द्रैः ८२ मासेश्वरो भाग्यगतो नराणां
भाग्योदयं धर्मविवर्द्धनं च स्त्रीरोगविलासं खलु मित्रलाभं सर्वार्थसिद्धि
व्ययगे ... उत्तरे धनस्यार विजमला नेत्ररोगागमिता च कथितं मुनीभ्

मेवतीहवर्षे ८२ लग्नाधिपःकेंद्रगतः शुभेनदृष्टो पुत्रोवावहुकष्टना
व॰यो॰ शंकरोति सौख्यंविविधंदशायां धनागमंकांतिविवर्द्धनंच ८३ मासेश्वरः
सूर्य्यदशायसंस्थः कर्म्मोदयंराजविवर्द्धनंच स्त्रीरोगंविनाशंधनधान्य
१६ नाशंकरोतिमित्राप्तसमागमंच ८४ इतिवर्षयोगावली संपूर्णमिति
भाद्रपदकृस्नाप्रतिपदा १ भौमवासरे संवत् १९५८ श्रीरामजीसहाय शुभं

अथत्रैराशिपचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सू	शु	श	गु	बु	चं	बु	मं	सू	मं	ह	चं
ह	चं	बु	मं	सू	शु	श	गु	सू	मं	ह	चं

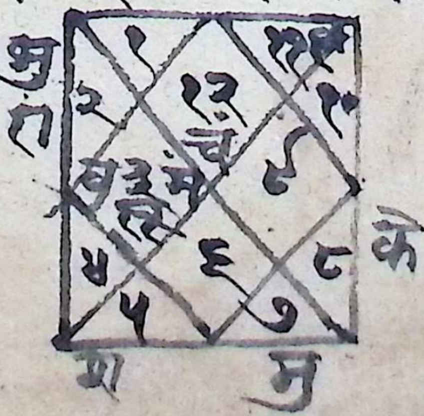
राम

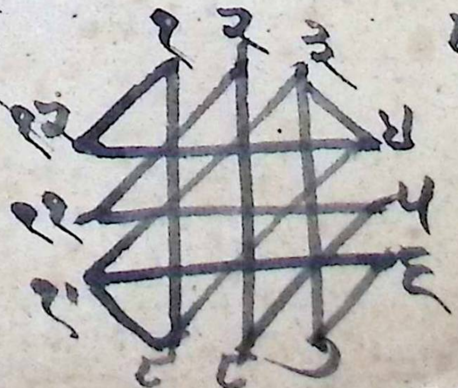
राशापासूर्यतिनाऽर्कशुक्रादिते
१ २ ४ ५ हिने
शु ह सिंघतेविलोमं
सू उलटलगावदिनके
रानम रातकेदिनम

निशिजपतु बुधहमाजा मेषादचतु
नीमहरभादविलोमं निसपरेषाऽर्क
६ ७ ८ ९ १० ११ स्कुजेपजचंद्रः १
चं बु श सू मं ह चं रात के
शु श शु सू म ह चं दिनके

उत्तिराशलग्नआदिलेकरवहांतकगिनकरजोसेमारहः तहीरषदे १
जताकि ३२ वर्षप्रवेशहै चारकाभागदिनोतो कुछ्नावचा अर्थात्
४ चारहीवचे ओरकुंभेका गुरुहै अवहमनेकुं मुगिनो तोराशि
क लघराशिआइ तोउसीपर रखनाचाइये क्रमसे सवोकुं ओर
माकिविधि२६ प्रवेशवर्षमे नोकोभागदे ८ जोसेसवाकी
ओरजिराशिपर चंद्रमावेठाहोय उत्तिसेगिनतोसेसरहताहै
तकगिनकररषः ३शीनीपतायाकोहै

सर २८ ३१८





अथपताकाचक्र

शनिभौमयदावेधोवेधश्चंद्रस्यराहुणा तस्यमृत्युर्नसंदेहो रोगादोदाहणो
भवेत ~~[illegible]~~ बुध भार्गवजीवाणां चंद्रवेधोयदा
भवत् नद्दर्व नहिनेराज्यं मर्थलाभो ऽकंवेसुखं २ सूर्यसेचंद्रमाका
[illegible]धलगेतो शरीररुजः मंगलकावेधलगचंद्रमासु द्रव्यनाशयहोइ बुध
[illegible]धलगचंद्रमासु शत्रुघातहोइ गुरुसेवेधलगचंद्रमासु द्रव्यवृद्धी
[illegible]वहोइ शुक्रसु चंद्रमासु वेधलगतो कामदेवक्षयहोइ शनिचं
[illegible]मासुवेधलगतो नेत्रहई होइ राहुचंद्रमासुवेधलगतो खेदहोइ
केतुचंद्रमासवेधलगतो । विकारहोइ राहुमंगलसवेधलगमृत्यु
[illegible] आर राहु सूर्यसवेधलगतनो सन्तपातको बिमारी होइ और
[illegible]ववेम चारकोभागदे ४ तोजोसेश रहतोजिसराशिपजोग्रहवठाहो

शायनमः॥ अथवर्षेयोगावलीलिख्यते॥ अथतंत्रियोगमाहा।
लग्नेशानिसंयुतेच स्थानेषष्टगऽष्टोगतःशशीच तदाभवेदित्यते
नः सर्वत्रलाभंकुरुतेनराणां १ यदिसुतद्विपतिर्व्ययभावगेव्यय
सुतभाविनिरीक्षिते तदपिभावफलंबहुकंन्यकाधन व्ययकुरुतेसुत
ते २ कर्म्माधिनाथो यदिकर्म्मभावे धानाधिनाथोयदिपंचमस्थः
राणांधनधान्यलाभं शत्रुक्षयंरिपुनिहंतिवर्षे ३ संतानथोरविमं
संतानभावेयदिपापखेटाः तदाहिवर्षे धन धान्य[illegible]नाशं संतान
कथितंमुनिंद्रैः ४ मरणाधिनाथोयदिशत्रुभावे लाभाधिपोलाभगतो
राणां सुतस्यसौख्यंसहमि[illegible]त्रलाभं निहंतिवर्षेमकरोतिरिष्टं ५ द्यूनेशा
यदाकेंद्रगोवीर्य्ययुक्तेशुभैः संयुतोवीक्षितोवानराणां कलत्रसौख्यध
नंधान्यलाभं सुपुत्रापोदयंशत्रुनाशंकरोति ६ सुखापतिर्लग्नपतिर्युतौचे
न्मन्योभवेन्मसुसमंचकष्टं गुह्येंद्रियेवारुधिरंप्रकोपात्कंठावरोधंक